माहे मुहर्रम

‘नए साल की ख़ुशियाँ’ या ‘ग़मे हुसैन رضی اللہ عنہ’

देखा जो चाँद मुहर्रम का, करबल का फसाना याद आया
वो धूप से तपती रेत पर, अहमद ﷺ का घराना याद आया ।

मुरत्तिब
डो. शहेज़ाद हुसैन क़ाज़ी

नाशिर : इमाम जा'फ़र सादिक़ फाउन्डेशन
(अेहले सुन्नत)

माहे मुहर्रम

“नए साल की ‘ख़ुशियां’
या
‘ग़मे हुसैन’ رضی اللہ عنہ”

देखा जो चांद मुहर्रम का, करबल का फसाना याद आया
वो धूपसे तपती रेत पर, अहमद ﷺ का घराना याद आया ।

मुरत्तिब
डो. शहज़ाद हुसैन क़ाज़ी

:: नाशिर ::
इमाम जा’फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नत)

किताब का नाम : **माहे मुहर्रम “नए साल की ‘ख़ुशियां’ या ‘ग़मे हुसैन’ ؑ”**
(अहादीष की रौशनी में)

मुरत्तिब : **डॉ. शहज़ाद हुसैन क़ाज़ी**

सफ़हात : **53**

सने ईशाअत : **1** मुहर्रम, **1441** हिजरी **; 1 September 2019**

कम्पोज़िंग : इमाम जा’फर सादीक फाउन्डेशन (अहले सुन्नत), मोडासा, अरवल्ली, गुजरात, इन्डिया

मिलने का पता

इमाम जा’फ़र सादीक़ फाउन्डेशन
(अहले सुन्नत)

मोडासा, अरवल्ली, गुजरात, इन्डिया
+91 85110 21786

अर्ज़े नाशिर

अल्लाह ! के नाम से शुरु के जो बड़ा महरबान बख़्शनेवाला है, नही है कोई मा'बूद सिवा अल्लाह ! के और मुहम्मद अल्लाह के रसूल है। अल्लाह ! का शुक्रगुज़ार हूँ कि उसने मुझ से "नए साल की 'खुशियाँ' या 'ग़मे हुसैन'" किताबचे की किताबत का काम लिया।

एक ऐसा भी वक़्त था जब मुसलमान हुक्मरानों ने अहले बैते अतहार, खास कर बनू फ़ातिमा पर बडे अर्से तक वो ज़ुल्म किए जो शायद ही किसी नबी की आल पर उस नबी की उम्मत ने किये हो। ज़ुल्म आज भी हो रहा है सिर्फ तरीक़ा बदला है, उस ज़माने में आले मुहम्मद को जिस्मानी तक़लीफें दी जाती थी, मिम्बरों पर उलमा को आले मुहम्मद को बुरे अल्फाज़ो से याद करने पर मजबूर किया जाता था, मुहद्दिषीन को उनसे रिवायत लेने पर सजाएं दी जाती थी, कहीं इमामे आज़म अबू हनीफ़ा को इमाम नफ़्सुसज़किया की मुहब्बत की वजह से कैद किया गया, तो कहीं इमाम शाफीई पर शिया-राफ़ज़ी के फ़तवे लगा कर उन्हें जलील किया गया, कहीं इमाम निसाई को मौला अ़ली की मुहब्बत की वजह से शहीद किया गया तो कही इमाम हाकिम जैसे मुहद्दिषीन पर शिया के फ़तवे लगाकर उनके मिम्बर को तोड़ दिया गया। एक ज़माने तक ये चलता रहा मगर अहले बैत के गुलाम कभी अम्मार बिन यासिर बनकर मैदाने जंग में आये तो कही अबू ज़र की तरह रज़ा-ए-इलाही में शहीद हुए। कहीं हबीब इब्न मज़ाहिर और हुर्र बनाकर करबला में आले मुहम्मद पर जान लूटाने आए तो कहीं इल्म के मैदान में इमाम निसाई, इमाम हाकिम, इमाम बुख़ारी, इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम शाफीई

रहमतुल्लाह अलैह बनकर आए तो कहीं दीन की तबलीग़ में ख़्वाजा गरीब नवाज़ रहमतुल्लाह अलैह, निजामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह, वारिसे पाक रहमतुल्लाह अलैह, मख़्दुम माहिम रहमतुल्लाह अलैह और मख़्दुम जलालुद्दीन जहाँगश्त रहमतुल्लाह अलैह बनकर आए। वक़्तन फ वक़्तन हर मैदान में गुलामानें अह्ले बैत रज़ियल्लाहु अन्हुम नासबिय्यत व ख़ारजिय्यत के मुकाबले में आतें रहें, अपनी ख़िदमात देतें रहें और अपनी जानें भी कुर्बान करते रहें।

इस ज़माने में भी नासबिय्यत और ख़ारजिय्यत तमाम फिर्क़ों में अपना सर उठा रही है बल्कि कहेना चाहुँगा उरुज़ पर पहुँच रही है, फर्क सिर्फ इतना है जो नासबिय्यत की ड़ोर कल सल्तनत के बादशाहों ने अपनी बादशाहत की लालच में संभाली थी और उलमा-मुहद्दिषीन की गरदनों पर तलवारें रख़कर लोगों से फज़ाइले अह्ले बैत रज़ियल्लाहु अन्हुम छुपाकर, बुग्ज़े अह्ले बैत रज़ियल्लाहु अन्हुम को आम करवा रहे थे वो ही नासबिय्यत की बागडोर आज कल कुछ फिर्कापरस्त नाम निहाद पीर, उलमा व कुछ तन्ज़ीमों नें संभाल ली है। कल के उलमा मजबूरी में औलाद व जान-माल के डर से फज़ाइले अह्ले बैत रज़ियल्लाहु अन्हुम छुपा रहे थे और उनके बुग्ज़ में कुछ ने तो मौज़ूअ अहादीष तक घडनी शुरु कर दी थी, तो आज भी ऐसा ही हो रहा है फर्क सिर्फ इतना है आज के इस Democracy (जम्हूरियत) के ज़माने में उलमा की जान को या माल व औलाद को तो ख़तरा नही है मगर दुन्यवी लालच चाहे वो शोहरत पाने की हो या दौलत की हो , या चन्द फित्नापरस्त लोगों को ख़ुश करने के लिए हो, इसी वजह से आज के उलमा की एक जमाअत फज़ाइले अह्ले बैत रज़ियल्लाहु अन्हुम नहीं बता रही है बल्कि अवाम को क़ुर्आन व अह्ले बैत रज़ियल्लाहु अन्हुम से दूर किया जा रहा है। क़ुर्आन के तर्जुमे व तफसीर से उम्मत को दूर किया जा रहा है और मुहब्बते अह्ले बैत रज़ियल्लाहु अन्हुम पर शिया-राफ़ज़ी के फ़तवे लगाये जा रहे है, जबकि मुतवातिर ह़दीषे ग़दीर से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कौल षाबित है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

“मैं जिसका मौला हूँ अ़ली रज़ियल्लाहु अन्हु भी उसके मौला है”

(अल मुजमुलकबीर, लि-तबरानी)

मुख्तसर हदीस :

"हो सकता है कि मुझे बुलाया जाए तो मैं कुबूल करुं, मैं तुम्हारे दरमियान दो भारी (अज़ीम) चीज़ें छोड़ कर जा रहा हूँ, इनमें से एक दूसरे से बढकर है, एक अल्लाह ﷻ की किताब और दूसरे मेरी इतरत या'नी मेरे अह्ले बैत ؑ, तो तुम सोच लो कि इन दोनों के बारे में मेरी कैसी जाँनशीनी करोगे, ये दोनों आपसमें जुदा नही होंगे ता आँ कि हौज़ पर आकर मुझ से मिले ।"

(इमाम निसाई फी ख़साइस अमीरुल मु'मिनीन अ़ली बिन अबी तालिब ؓ)

अब कारिइन आपको सोचना है कि हमारे नबी ﷺ तो हमे कुर्आन और अह्ले बैत ؑ से वाबस्तगी का हुक्म दे रहे है और नाम निहाद पीर व उलमा व कुछ तन्ज़ीमों की एक जमाअत फिर्कापरस्ती फैलाकर इनसे अवाम को दूर रखने का काम अन्जाम दे रहे है । आज माहौल ये बनाया जा रहा है कि जो अह्ले बैत ؑ से मुहब्बत करे उसे शिया, राफ़ज़ी जैसे अल्फाज़ो से उसे नवाज़ा जाता है, बेचारी अवाम को ये तक बताया नहीं जाता की सिर्फ मुहब्बत व फज़ीलते अह्ले बैत ؑ से कोई राफ़ज़ी नही बनता बल्कि जो सहाबाए किराम की शानमें लान व तान करता है उसे राफ़ज़ी कहा जाता है । मैं इस बात पर ज़्यादा लिखकर अपनी बात को तवील नहीं करना चाहता जो हक था वो बयान करने की कोशिश की है । अल्लाह ﷻ हम सबको नेक हिदायत दे आमीन....

अल्लाह ﷻ रब्बुल इ़ज़्ज़त से दुआ है कि मेरी इस काविश को कुबूल फरमाये और मेरी इस किताबचे की किताबत व ईशाअत का सवाब तमाम उम्मते रसूलुल्लाह ﷺ के मोमिन व मोमिनात की रुहो को व मेरी नानी मोहतरमा मरहुमा ज़ुबैदाख़ातुन बिन्ते हुसैनमियाँ चौहाण की जिन्हों ने मुझे बचपन से मुहब्बते अह्ले बैत ؑ शिखायी, उनकी रुह को अता फ़रमाये और उनकी मग़फिरत फ़रमाये, सय्यिदा

ज़हराए पाक ﷺ के सदके उनके गुनाहों को बख़्श दे और उनको सय्यिदा जहराए पाक की कनीज़ों में शुमार करें। आमीन....

इस काम में हौंसला अफज़ाई करने वाले **"खतीबे अह्ले बैत ﷺ मुफ्ती शफद्दीक्द हनफ़ी क़ादरी साहब (मुम्बई)" का तहे दिल से शुक्रगुजद्दार हूँ और जब भी किताब में किसी अरबी या उर्दू अल्फ़ाजद्द के हिन्दी-गुजराती मअना में Confuse हुआ हूँ तब तब मेरी मदद पर हर वक्त आमदा रहने वाले "दीवान मोहसीनशाह (सांसरोद,गुजरात)"** का भी शुक्रगुज़ार हूँ।

अल्लाह ﷻ ! से दुआ है मेरी इस हक़ीर सी काविश को कुबूल फ़रमाए और मुझे रसूलुल्लाह ﷺ व अह्ले बैत ﷺ की शफाअत नसीब फरमाए ! आमीन

डो. शहज़ादहुसैन यासीनमियां क़ाज़ी
1 मुहर्रम, हिजरी सन **1441**
(**1** सप्टेम्बर, **2019**)

फेहरिस्त

मुहर्रम : इस्लामी नए साल का आगाज़

* इस्लाम एक वाहिद मज़हब है जिसके साल का आगाज़ भी कुरबानी से और इख़्तेताम भी कुरबानी पर । इसी लिए इस्लाम की 1400 साल की तारिख़ में दुसरे मज़हबो की तरह नए साल की खुशियां न मना कर माहे मुहर्रम में 'ग़मे हुसैन' मनाया जाता है । मगर सद अफसोस पिछले कुछ 4-5 सालों से मुहर्रम के चांद के साथ ही नए साल की ख़ुशियां व मुबारक़बादी का एक नया रिवाज इजाद किया गया है । **तअ़ज्जुब की बात तो ये है की इस पर अह्ले इल्म भी अमल कर रहे है !**
* बेशक नए साल की ख़ुशियां या मुबारकबादी में शरीयतन कोइ हर्ज नही है, ना हि हराम है । मगर **'मस्लके अह्ले सुन्नत'** का अकीदा रसूलुल्लाह की सुन्नत, मुहब्बत, निस्बत व मवद्दत पर मबनी है । 'अह्ले सुन्नत की तो बुनियाद ही निस्बत है ।' अह्ले सुन्नत के अकाईद की बुनियाद में रसूलुल्लाह की निस्बत है, अह्ले बैत की निस्बत है । ख़ुल्फाए राशिदीन की निस्बत है । कुतबुल अक़ताब सय्यिदना अब्दुल क़ादिर जिलानी व सुल्तानुलहिन्द ख्वाजाए ख्वाजगान गरीब नवाज़ व दीगर औलिया-मसाइख़ की निस्बत है ।
* लफ्ज़ 'निस्बत' या'नी Relationship (रिलेशनशीप) या 'तआ़ल्लुक' या 'संबंध' । हमारी रसूलुल्लाह के साथ निस्बत है की हम आप के उम्मती है, उनका कलमा पढ़नेवाले है । कल रोज़े क़यामत उनकी शफाअत के तलबगार है । बतौर निस्बते रसूलुल्लाह के और एक उम्मती जो आशीके रसूल होने का भी दावा करे तो उस पर वाजिब है की, ***"जब रसूलुल्लाह खुश तो उम्मती भी खुश, और जब रसूलुल्लाह ग़मगीन तो उम्मती भी ग़मगीन"*** ।

* मुहर्रम के 10 दिनों में हमारे आका व मौला सय्यिदना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह ﷺ की अह्ले बैत पर करबला में कैसा ज़ुल्म हुआ वो तो तफ़सील से इस परचे में बयान नही हो सकता और ना ही कोई उम्मती इससे अंजान है। नवासए रसूल ﷺ जन्नत के जवानों के सरदार सय्यिदना इमाम हुसैन رضي الله عنه की शहादत व सर को नेज़े पर चढाना, तीन दिन की अह्ले बैत की औरतों, बच्चों और मर्दों की भूख व प्यास, अ़ली अकबर व क़ासिम رضي الله عنه जैसे जवानों की बिना सर की ज़ख्मी लाशे, औ़न व मुहम्मद رضي الله عنه जैसे 8-10 की साल के बच्चों के कटे हुवे सर, मासूम अ़ली असगर رضي الله عنه का छिदा हुआ गला, 5 साल की सय्यिदा सुक़ैना बिन्ते हुसैन رضي الله عنه के कानों की बालियां खिंचकर लहुलुहान करना... कलम लिखने से कांपती है....ऐसे ज़ुल्म ढाए गए।
* सय्यिदना इमाम हुसैन رضي الله عنه ने ये क़ुरबानी अपने नानाजान ﷺ की उम्मत की इस्लाह की ख़ातिर व ज़ुल्म के खिलाफ हक़ की आवाज़ बुलन्द करने के लिए दी। मगर अफसोस सद अफसोस... आज उम्मत ग़मे हुसैन رضي الله عنه भूलकर मुबारकबादी दे रही है और ख़ुशीयां मना रही है और इसके शरई तौर पर जाइज़ होने का जवाज़ ढुंढकर फतवे दे रही है।

1400 साल बाद भी 'ग़मे हुसैन' क्यूं मनाया जाए ?

* हां, आज इन वाकेआत को 1400 साल हो गए है तो अब 'ग़म' क्यूं मनाया जाए ? तवारिख़ की किताबों में से कई हस्तियां, कई जंगी दास्तानें और कई वाकेआत मिट गए । मगर वाकेआ करबला आज भी 'ग़मे हुसैन ﷺ' में ज़िन्दा है । क्यूंके नस्ले इन्सानी की तारिख़ में हज़रते आदम ﷺ से लेकर हज़रत इसा ﷺ तक कमोबेश 1,23,999 अम्बियाए किराम ﷺ में से किसी नबी के घरवालों पर ऐसा ज़ुल्म नहीं किया गया, जो करबला में सरवरें अम्बिया, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह ﷺ के नवासे व अह्ले बैत ﷺ पर रसूल ﷺ का ही कलमा पढनेवालों ने किया । 78 सरों को नेज़ों पर महीनों तक घुमाया गया ।

  और वोह ग़म क्यूं न मनाया जाए के वाकेआ करबला अभी हुआ भी नही, अभी तो इमाम हुसैन ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ की गोद में खेल रहे है की फरिश्ते आकर रसूलुल्लाह ﷺ को शहादते हुसैन ﷺ के ख़बर सुनाए और हमारे आका ﷺ ग़मगीन होकर रोने लगे ।

* और वोह ग़म क्यूं न मनाया जाए के हमारे मदीनेवाले प्यारे आका, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह ﷺ ने इस दुनिया से परदा फ़रमा लिया हो, बावजूद इसके हि.स. 61 में 10 मुहर्रम को वाकेआ करबला हो और सय्यिदना इमाम हुसैन ﷺ शहीद हो तो उम्मुल मु'मिनीन सय्यिदा उम्मे सलमा ﷺ व सहाबीए रसूल सय्यिदना इब्ने अब्बास ﷺ को उसी वक्त 10 मुहर्रम को ख़्वाब में हमारे आका मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह ﷺ गुबार आलुद बाल-दाढी के साथ ग़मगीन हालत में शहादते हुसैन ﷺ पर ग़म का ईज़हार करे ।

* अय उम्मते रसूलुल्लाह ﷺ ! अय आशिक़ाने रसूलुल्लाह ﷺ ! अय लब्बैक या रसूलुल्लाह ﷺ का दम भरनेवालों... ज़रा सोचो कितना गहरा सदमा व ग़म हुआ होगा हमारे नबी रसूलुल्लाह ﷺ को ।

* तअ़ज्जुब है, आका रसूलुल्लाह ﷺ जिस अशराह में इतने ग़मगीन हुए उन दिनों में उनकी उम्मत खुशियां मनाने के लिए या मुबारक़बादी की शरई दलील ढूंढ रही है, क्या यही है निस्बते रसूलुल्लाह ﷺ ??? क्या यही वफादारी है अह्ले बैत ؓ के साथ ???

हमने इस किताब में 'ग़मे हुसैन ؓ' में ग़मगीन होना और रोकर आंसू बहाने पर रसूलुल्लाह ﷺ की अहादीषे मुबारक़ा पेश की है और 1400 साल से अह्ले सुन्नत के मुहद्दिषीन व सुफियाए किराम व उलमाए किराम व मशायख़ीने उजाम का क्या तरीका रहा है इसको ब-हवाला कुतुबे अह्ले सुन्नत से पेश करने की काविश की है जिसे अल्लाह ﷻ कुबुल फ़रमाए और हम सब को इस पर अमल करने की तौफीक अता फ़रमाए । आमीन...

शहादते हुसैन से पहले रसूलुल्लाह का ग़मे हुसैन رضي الله عنه
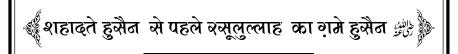
(1) - عن عبد الله بن نجي عن أبيه : انه سار مع علي رضي الله عنه وكان صاحب مطهرته فلما حاذى نينوى وهو منطلق إلى صفين فنادى علي رضي الله عنه اصبر أبا عبد الله اصبر أبا عبد الله بشط الفرات قلت وماذا قال دخلت على النبي صلى الله عليه و سلم ذات يوم وعيناه تفيضان قلت يا نبي الله أغضبك أحد ما شأن عينيك تفيضان قال بل قام من عندي جبريل قبل فحدثني ان الحسين يقتل بشط الفرات قال فقال هل لك إلى ان أشمك من تربته قال قلت نعم فمد يده فقبض قبضة من تراب فأعطانيها فلم أملك عيني أن فاضتا

[مُسند احمد : 648 (85/1) ، قال الشيخ زبير عليزئی في فضائل الصحابة : إسناده صحيح ، السلسلة الصحيحة : 822 ، قال الشيخ الألباني : إسناده صحيح]

[المُستدرک للحاكم : 4884 ، السلسلة الصحيحة : 374 ، قال الامام حاكم و الشيخ الألباني : إسناده صحيح]

(1) **मुस्नद अहमद की हदीस में है :** सय्यिदना अबू अब्दुल्लाह ताबई رحمة الله عليه के बेटे सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन नज्जा رحمة الله عليه अपने वालिद से बयान करते है जो सय्यिदना अ़ली बिन अबु तालिब رضي الله عنه के लिए (सफर में) सामाने तहारत का बंदोबस्त करते थे के वो सय्यिदना अ़ली बिन अबू तालिब رضي الله عنه के साथ सफर में थे, जब आप सिफ्फीन को जाते हुए (मक़ाम) नैनवा के बराबर पहुंचे तो आप رضي الله عنه ने बुलंद आवाज़ से कहा: “ऐ अबू अब्दुल्लाह ! (ये सय्यिदना हुसैन बिन अ़ली رضي الله عنه की कुनियत थी) फरात के किनारे सब्र करना, ऐ अबू अब्दुल्लाह ! फरात के किनारे सब्र करना, “मैंने पूछा: ‘‘क्या (ख़ास) बात हो गई (ऐ अमीरुल मु’मिनीन) ?” सय्यिदना अ़ली बिन अबू तालिब رضي الله عنه ने फ़रमाया: “एक दिन रसूलुल्लाह ﷺ के पास हाज़िर हुआ, तो (क्या देख़ता हूं के) आप ﷺ की मुबारक आंख़ों से आंसू रवां थे, मैंने (बेचैन होकर) अर्ज़ किया: “क्या आप को किसीने नाराज़ किया है ? आप ﷺ की मुबारक आंख़ों से आंसू क्यूं बह रहे है ?” रसूलुल्लाह ﷺ ने ईरशाद फ़रमाया: “नहीं । बल्कि अभी अभी सय्यिदना जिब्रईल عليه السلام मेरे पास से उठ कर गए है और उन्होंने पूछा के क्या में आप ﷺ को हुसैन رضي الله عنه के मकतल की मिट्टी लाकर दिख़ाउं ?” मैंने कहा ‘‘हां दिख़ाओ ! चुनांचे उन्होंने मिट्टी की एक मुठ्ठी भर कर मुझे दी, तो इस पर मैं अपने आंसू ना रोक सका ।”

(मुस्नद अहमद:648, अल मुस्तदरकलिल हाकिम :4884) (शैख़ अल्बानी आर शैख़ जुबेर अ़ली ज़ई ने हदीष की सनद को सहीह कहा है ।)

* इमाम हाकि़म नीशापुरी رحمۃ اللہ علیہ ‘अल मुस्तदरक अला सहीहैन’ में “अबू अब्दुल्लाह हुसैन बिन अ़ली अश्शहीद इब्ने फ़ातिमा बिन्त रसूलुल्लाह ﷺ के फ़ज़ाइल” के बाब में सबसे पेहले हुज़ुर नबीए करीम ﷺ के ग़मे हुसैन رضی اللہ عنہ में रोने वाली हदीष लाए है ।
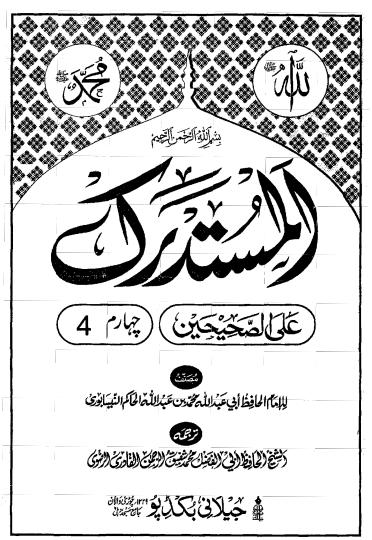
اَوَّلُ فَضَائِلِ اَبِی عَبْدِ اللّٰهِ الْحُسَيْنِ بْنِ عَلِيٍّ الشَّهِيْدُ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا بْنِ فَاطِمَةَ بِنْتَ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَلٰى آلِهِ

ابوعبداللہ حسین بن علی الشہید ابن فاطمہ بنت رسول اللہ ﷺ کے فضائل۔

(2) 4818۔ اَخْبَرَنَا اَبُو عَبْدِ اللّٰهِ مُحَمَّدُ بْنُ عَلِيِّ الْجَوْهَرِيُّ بِبَغْدَادَ، حَدَّثَنَا اَبُو الْاَحْوَصِ مُحَمَّدُ بْنُ الْهَيْثَمِ الْقَاضِيَ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُصْعَبٍ، حَدَّثَنَا الْاَوْزَاعِيُّ، عَنْ اَبِی عَمَّارٍ شَدَّادُ بْنُ عَبْدِ اللّٰهِ، عَنْ اُمِّ الْفَضْلِ بِنْتِ الْحَارِثِ، اَنَّهَا دَخَلَتْ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَقَالَتْ: يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ، اِنِّی رَاَيْتُ حُلْمًا مُنْكَرًا اللَّيْلَةَ، قَالَ: مَا هُوَ؟ قَالَتْ: اِنَّهُ شَدِيْدٌ، قَالَ: وَمَا هُوَ؟ قَالَتْ: رَاَيْتُ كَاَنَّ قِطْعَةً مِنْ جَسَدِكَ قُطِعَتْ وَوُضِعَتْ فِی حِجْرِی، فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: رَاَيْتِ خَيْرًا، تَلِدُ فَاطِمَةُ اِنْ شَاءَ اللّٰهُ غُلَامًا، فَيَكُوْنُ فِی حِجْرِكِ. فَوَلَدَتْ فَاطِمَةُ الْحُسَيْنَ فَكَانَ فِی حِجْرِی كَمَا قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَدَخَلْتُ يَوْمًا اِلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَوَضَعْتُهُ فِی حِجْرِهِ، ثُمَّ حَانَتْ مِنِّی الْتِفَاتَةٌ، فَاِذَا عَيْنَا رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تُهْرِيْقَانِ مِنَ الدُّمُوْعِ، قَالَتْ. فَقُلْتُ: يَا نَبِيَّ اللّٰهِ، بِاَبِی اَنْتَ وَاُمِّی مَا لَكَ؟ قَالَ: اَتَانِی جِبْرِيْلُ عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ، فَاَخْبَرَنِی اَنَّ اُمَّتِی سَتَقْتُلُ ابْنِی هٰذَا، فَقُلْتُ: هٰذَا؟ فَقَالَ: نَعَمْ، وَاَتَانِی بِتُرْبَةٍ مِنْ تُرْبَتِهِ حَمْرَاءَ

هٰذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحٌ عَلٰى شَرْطِ الشَّيْخَيْنِ. وَلَمْ يُخَرِّجَاهُ

(2) "शद्दाद बिन अब्दुल्लाह उम्मे फज़ल बिन हारिष से रिवायत करते हैं, वोह रसूल ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया : "अय अल्लाह عزوجل के रसूल ﷺ ! मैंने आज रात एक ना पसंदीदा ख्वाब देखा है ।" आप ﷺ ने पुछा के "वोह ख्वाब क्या है ।" उन्होंने कहा के "बहुत ना पसंदीदा ख्वाब देखा है ।" आप ﷺ ने पुछा के "कौनसा ख्वाब है ?" उन्होंने बताया के "मैंने देखा के आप के जिस्मे अत्हर का एक टुकड़ा कट कर मेरी गोद में आ गिरा है ।" आप ﷺ ने फ़रमाया : "येह एक अच्छा ख्वाब है । ان شاءاللہ फ़ातिमा علیہا السلام के यहां एक बेटा पैदा होगा जो तुम्हारी गोद में होगा ।" चुनांचे फातिमा علیہا السلام के यहां सय्यिदना हुसैन رضی اللہ عنہ की विलादत हुई और रसूलुल्लाह ﷺ की पेशींगोई के मुताबिक वोह मेरी गोद में आए । मेरी तवज्जोह जरा हटी तो **मैंने देखा कि नबी ﷺ की दोनों आंखों से आंसु जारी हैं ।** मैंने अ़र्ज़ किया : "अय अल्लाह عزوجل के नबी ﷺ ! मेरे मां-बाप आप पर कुरबान ! आप को क्या हुवा है ?" आप ﷺ ने जवाब दिया : "मेरे पास जिब्राईल علیہ السلام आए थे और मुझे येह ख़बर दी है कि आप की उम्मत आप के इस नवासे को अ़नकरीब कत्ल कर देगी । "

मैंने अ़र्ज़ किया : “क्या ऐसा होगा ?” आप ﷺ ने फ़रमाया : “हां । ऐसा ही होगा, मेरे पास वोह उस सरज़मीन की सुर्ख़ मिट्टी भी लाए थे जहां वोह शहीद किये जाएंगे ।”

(अल मुस्तदरक अलस्सहीहैन 3:176 । इमाम हाकिम केहते हैं : येह हदीष शैख़ेन की शर्त के मुताबिक सहीह है । लेकीन दोनों ने इसकी तख़रीज नहीं की है । इमाम बैहक़ी ने इस रिवायत को दलाइलुन नुबुव्वह 6:468-469 में इमाम हाकिम की सनद से रिवायत किया है । ख़वारिज़मी, मक्तलल हुसैन 1:232, तारीख़े दमिश्क़, 14:196, अल बिदाया वन्निहाया 6:258)

(3) الامام السجاد عليه السلام عن أسماء بنت عميس :

عن علی بن الحسين عليهما السلام ، قال : حدثتنی أسما بنت عميس ، قالت :

" قبلت جدتک فاطمة عليها السلام بالحسن والحسين عليهما السلام ..... فلما كان بعد حول من مولد الحسن عليه السلام ولدت الحسين عليه السلام فجاء نی النبی ﷺ فقال: يا أسماء هاتی ابنی ، فدفعته اليه فی خرقة بيضاء ، فاذن فی أذنه اليمنی وأقام فی اليسری ، ثم وضعه فی حجره وبكی.

قالت أسماء: فقلت : فداک أبی وأمی ، مم بكاؤک ؟! قال : علی ابنی هذا ، قلت : انه ولد الساعة ، قال : يا أسماء ، تقتله الفئة الباغية لا أنالهم الله شفاعتی ، ثم قال : يا أسماء، لا تخبری فاطمة بهذا فانها قريبة عهد بولادته ....."

(3) इमाम सज्जाद ﷺ हज़रत अस्मा बिन्ते उ़मैस رضی اللہ عنہا से :

“अ़ली बिन हुसैन رضی اللہ عنہ बयान करते हैं मुझ से अस्मा बिन्ते उ़मैस رضی اللہ عنہا ने बयान किया के तुम्हारी फूफी ने सय्यिदना हसन और हुसैन علیہ السلام की विलादत पर फ़ातिमा علیہا السلام को बोसा दिया । सय्यिदना हसन رضی اللہ عنہ की विलादत के एक साल बा’द जब सय्यिदना हुसैन पैदा हुवे तो नबी ﷺ मेरे पास आए और फ़रमाया : “अस्मा ! मेरे बेटे को मुझे दो ।” मैंने एक सुफैद कपड़े में लपेट कर उन्हें आप के हवाले कर दिया ।

आप ने उन के दाहिने कान में अज़ान और बाएं में तकबीर कही **और अपनी गोद में लिये हुए रोने लगे ।** अस्मा ﷺ बयान करती हैं के, मैंने अ़र्ज़ किया : "मेरे मां-बाप आप पर कुरबान ! आप रोते क्यों हैं ?" फ़रमाया : "अपने इस बेटे पर रो रहा हूं ।" मैंने कहा : "येह तो अभी अभी तवल्लुद (पैदा) हुए हैं ।" आप ﷺ ने फ़रमाया : अस्मा ! मेरे इस बेटे को एक बाग़ी गिरोह क़त्ल करेगा, अल्लाह ﷻ उसे मेरी शफाअ़त नहीं पहूंचने देगा ।" इस के बा'द आप ﷺ ने कहा : "अस्मा ! इस बात की ख़बर फातिमा को न देना क्यूं के अभी तो उन के यहां बच्चे की विलादत हुई है ।"

(मक़्तलल इमामुल हुसैन ﷺ अल ख़्वारिज़्मी 1:165-137 । ज़ख़ाइरुल उ़क़्बा : 120, और उन्हों ने कहा है के इस रिवायत को इमाम अ़ली बिन मूसा रज़ा ﷺ ने बयान किया है ।)

(4) مولی لزینب ، عن زینب بنت جحش :

عن زینب بنت جحش ، قالت

" بینا رسول اللہ ﷺ فی بیتی وحسینؓ عندی حین درج ، فغفلت عنہ، فدخل رسول اللہ ﷺ فجلس علی بطنہ ، قالت : فانطلقت لآخذہ فاستیقظ رسول اللہ ﷺ فقال: دعیہ ، فترکتہ حتی فرغ (من بولہ) ، ثم دعا بماء فقال : انہ یصب من الغلام ویغسل من الجاریۃ ، فصبوا صبا ، ثم توضا ثم قام احتضنہ الیہ ، فاذا رکع أو جلس وضعہ ، ثم جلس فبکی ، ثم مد یدہ ، فقلت حین قضی الصلاۃ : یا رسول اللہ، انی رأیتک الیوم صنعت شیئا ما رأیتک تصنعہ !! قال: ان جبرئیل أتانی فأخبرنی أن ھذا تقتلہ امتی. فقلت: أرنی ، فأرانی تربۃ حمراء".

(4) उम्मुल मु'मिनीन सय्यिदा "ज़ैनब ﷺ के ग़ुलाम, ज़ैनब बिन्ते जहश ﷺ से रिवायत करते है के सय्यिदा जैनब ﷺ बयान करती हैं :

रसूलुल्लाह ﷺ मेरे घर में इस्तराहत (आराम) फ़रमा रहे थे, हज़रत हुसैन ﷺ आए और मेरे पास रहे । मैं ज़रा ग़ाफिल हुई तो वोह रसूलुल्लाह ﷺ के पास जा पहूंचे और आप के बतन मुबारक पर बैठ गए । मैं उन को उठाने के लिए लपकी तो आप ﷺ की आंख खुल गई, आप ﷺ ने फ़रमाया : 'उन्हें छोड़ दो ।' मैंने छोड़ दिया । हुसैन ﷺ ने आप ﷺ के कपड़ों पर पेशाब कर दिया । जब वोह पेशाब से फारिग़ हुए तो आप ﷺ ने पानी मंगाया और फ़रमाया : "बेटे के पेशाब पर पानी डाला जाता है और बेटी के पेशाब को धुला जाता है ।" उन्हों ने आप ﷺ के कपड़ों पर पानी डाला ।

आप ﷺ ने इस के बा'द वुज़ू किया और उन्हें गोद में ले कर नमाज़ पढ़ने खड़े हो गए । जब आप ﷺ रुकुअ़ में या जल्से में जाते तो उन्हें ज़मीन पर रख़ देते । **फिर आप ﷺ जब नमाज़ में बैठे तो रोने लगे ।** फिर आप ﷺ ने हाथ फैलाए । जब आप ﷺ नमाज़ से फारिग हुए तो मैंने अर्ज़ किया : अय अल्लाह ﷻ के रसूल ﷺ ! मैने आप को आज एक ऐसा काम करते देख़ा के उस से पेहले इस तरह का काम नहीं देख़ा था । आप ﷺ ने फ़रमाया : "मेरे पास जिब्रईल ؑ आए थे और मुझे येह ख़बर दी कि हुसैन ؓ को आप की उम्मत क़त्ल कर देगी ।" मैंने कहा : "ज़रा मुझे दिख़ाओ तो उन्हों ने मुझे ख़ून से हुई सुर्ख़ मिट्टी दिख़ाई ।"

(अल मुअ़जमुल कबीर 24:54-55 / ह. 141, 24:57 / ह. 147, अल मतालिबुल अ़ालिया लि इब्ने हजर 2:87 / ह. 12, मजमअ़ज़ ज़वाइद 1:285, मुसन्नफ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक 1:381-382 / ह. 1491, कन्ज़ुल उ़म्माल 9:525 / नंबर 27268)

(5) عن أبی الطفیل:

عن أبی الطفیل ، قال:

" استأذن ملک القطر أن یسلم علی النبی ﷺ فی بیت ام سلمة ، فقال : لا یدخل علینا أحد، فجاء الحسین علیه السلام فدخل، فقالت أم سلمة : هو الحسین، فقال النبی ﷺ دعه، فجعل یعلو رقبة النبی ﷺ ویعبث به والملک ینظر ، فقال الملک : أتحبه یا محمد؟ قال: ای والله انی لاحبه ، قال : أما ان أمتک ستقتله ، وان شئت أریتک المکان، فقال بیده فتناول کفا من تراب ، فأخذت أم سلمة التراب فصرته فی خمارها، فکانوا یرون أن ذلک التراب من کربلاء".

(5) "अबू तुफैल से रिवायत है :

अबू तुफैल से रिवायत है, वोह बयान करते हैं के नबीए अकरम ﷺ जिस वक़्त सय्यिदा उम्मे सलमा ؓ के घर में थे, बारिश के फरिश्ते ने आप ﷺ को सलाम करने की इजाज़त तलब की । आप ﷺ ने फ़रमाया : देखो कोई दरवाज़े से अन्दर दाख़िल ना हो । इतने में सय्यिदना हुसैन ؑ आ गए और घर में दाख़िल हो गए । उम्मे सलमा ؓ ने कहा : वोह हुसैन हैं। नबीए अकरम ﷺ ने फ़रमाया : "उन्हें छोड़ दो आने

दो।” सय्यिदना हुसैन ﷺ नबी ﷺ की गरदन पर सवार हो गए और आप ﷺ से खेलने लगे । येह सारा मंज़र फरिश्ता देख रहा था । उसने पूछा “ऐ मुहम्मद ﷺ ! क्या आप इन से मुहब्बत करते हैं ?” आप ﷺ ने फ़रमाया : “अल्लाह ﷻ की कसम ! मैं इन से मुहब्बत करता हूं।” लेकिन आप की उम्मत तो इन्हें क़त्ल कर देगी । अगर चाहें तो मैं आप को इन की जाए शहादत दिखा दूं । फिर उन्हों ने हाथ बढा कर एक मुट्ठी मिट्टी दिखाई, जिसे उम्मे सलमा ﷺ ने अपने दुपट्टे में रख लिया । लोगों ने बा'द में देखा तो उन का कहना था के येह मिट्टी सरज़मीने करबला की ही है ।” इसे इमाम तबरानी ने रिवायत किया है और इस की सनद हसन है ।

(मजमउल-ज़वाइद 9:190, फैज़ुल क़दीर शरह अल जामेउस्सग़ीर 1:266)

(6) ابوغالب عن أبی أمامة الباهلی:

عن أبی أمامة الباهلی،قال:

قال رسول الله ﷺ لنسائه: لاتبکوا هذاالصبی یعنی حسیناً،قال: وکان یوم ام سلمة،فنزل جبریل علیه السلام ،فدخل رسول الله ﷺ الداخل وقال لأم سلمة: لاتدعی احداً یدخل علی،فجاء الحسین علیه السلام ، فلمانظر الی النبی ﷺ فی البیت أراد أن یدخل،فأخذته ام سلمة فاحتضنته وجعلت تناغیه وتسکنه ، فلمااشتد علی البکاء خلت عنه ،فدخل حتی جلس فی حجر النبی ﷺ ، فقال: جبریل علیه السلام للنبی ﷺ ان أمتک ستقتل ابنک هذا. فقال النبی ﷺ یقتلونه وهم مؤمنون بی؟قال :نعم یقتلونه .فتناول جبریل علیه السلام تربة فقال: مکان کذا وکذا.فخرج رسول الله ﷺ وقد احتضن حسیناً کاسف البال مهموماً،فظنت ام سلمة انه غضب من دخول الصبی علیه،فقالت: یا نبی الله! جعلت لک الفداانک قلت لنا : لاتبکوا هذاالصبی وأمرتنی أن لاأدع أحداً یدخل علیک،فجاء فخلیت عنه ،فلم یرد علیها ،فخرج الی أصحابه وهم جلوس،فقال لهم: ان أمتی یقتلون هذا،وفی القوم ابوبکر،وعمر وکانا أجرأ القوم علیه فقالا: یانبی الله ،یقتلونه وهم مؤمنون.قال :نعم هذه تربته ، فأراهم ایاها.قال الذهبی والمناوی :اسناده حسن.

(6) अबू गालिब हज़रत अबू उमामह बाहली से रिवायत करते है :

"अबू उमामह बाहली رضي الله عنه बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने अपनी अज़वाजे मुतह्हरात से फ़रमाया के **'इस बच्चे या'नी हुसैन رضي الله عنه को ना रूलाओ ।'** रावी का बयान है के उस दिन आप ﷺ सय्यिदा उम्मे सलमा رضي الله عنها के घर थे जिब्रईल عليه السلام तशरीफ लाए रसूलुल्लाह ﷺ घर में दाखिल हुए और उम्मे सय्यिदना सलमा رضي الله عنها से कहा के देखो किसी को घर में दाखिल होने मत देना । इतने में सय्यिदना हुसैन رضي الله عنه आ गए और जब उन्होंने नबी ﷺ को अन्दर देखा तो आप ﷺ के पास जाने का इरादा किया । उम्मे सलमा رضي الله عنها ने उन्हें गोद में ले लिया और उन को बेहलाने लगीं । लेकिन जब उन का रोना नहीं थमा तो उन को छोड़ दिया । वोह घर में दाखिल हो गए और जा कर नबी ﷺ की गोद में बैठ गए । जिब्रईल عليه السلام ने नबी ﷺ से कहा : "आप की उम्मत आप के इस बेटे को क़त्ल कर देगी ।" नबी ﷺ ने तअज्जुब से पूछा के "क्या वोह मुझ पर इमान रखते हुए इन्हें क़त्ल कर देंगे ?" जिब्रईल عليه السلام ने जवाब दिया के "हां वोह उन्हें क़त्ल कर देंगे ।" फिर जिब्रईल عليه السلام ने एक मुट्ठी मिट्टी हाथ बढा कर दिखाई और कहा येह फलां जगह की है । **येह सुन कर रसूलुल्लाह ﷺ सय्यिदना हुसैन عليه السلام को पेहलु में दबाए ग़मों से निढाल हो कर बाहर आए ।** सय्यिदा उम्मे सलमा رضي الله عنها ने समझा के शायद बच्चे के अन्दर दाखिल होने की वजह से आप नाराज़ हैं । उन्हों ने अ़र्ज़ किया : ऐ अल्लाह عزوجل के नबी ﷺ ! आप पर मेरी जान कुरबान ! आप ﷺ ने फ़रमाया था कि उस बच्चे को रुलाओ नहीं और आप ﷺ ने मुझे येह भी हुक्म दिया था कि मैं किसी को अन्दर न जाने दूं । सय्यिदना हुसैन رضي الله عنه जब आए तो मैंने उन का रास्ता नहीं रोका । इस पर आप ﷺ ने कोई जवाब नहीं दिया और आप ﷺ बाहर निकल कर अपने अस्हाब के पास आए जहां वोह बैठे हुए थे । आप ﷺ ने उन से कहा : "मेरी उम्मत इस बच्चे को क़त्ल कर देगी ।" मजलिस में उस वक़्त सय्यिदना अबू बकर, सय्यिदना उ़मर رضي الله عنهما भी मौजुद थे। दोनों आप ﷺ से बात चीत करने की हिम्मत जुटा लिया करते थे । उन दोनों हज़रात ने पुछा : "अय अल्लाह عزوجل के नबी ﷺ ! क्या वोह मोमीन रहेते हुए इसे क़त्ल कर देंगे ।" आप ﷺ ने फ़रमाया : "हां । येह उस सरज़मीन की मिट्टी है ।" इस के बा'द आप ﷺ ने उन सब लोगों को मिट्टी दिखाई" इमाम ज़हबी رحمة الله عليه और मनादी رحمة الله عليه ने इस हदीष को हसन कहा है।

(अल मुअजमुल कबीर 8:258, मजमउझ्ज़वाईद 9:189, इस को तबरानी ने भी रिवायत किया है, इस के रिजाल षिक़ा हैं अलबत्त कुछ में ज़ुअफ़ (ज़ो'फ़) है, तारीख़े दमिश्क 14:190, सियरे अ़अ़लामुन्नुबला 3:188-189, ज़हबी ने इस की सनद को हसन कहा है । अर्रौज़ुन्नज़ीर 1:13-14, केहते हैं के इस की सनद हसन हैं । इब्ने कषीर ने बिदाया वन्निहाया 8:218 में इस रिवायत की तरफ इशारा किया है ।)

(7) عن عبدالله بن عمرو بن العاص ،عن معاذ بن جبل:

عن معاذ بن جبل:

"خرج علينا رسول الله ﷺ متغير اللون فقال: أنا محمد أوتيت فواتح الكلم وخواتمه ،فأطيعوني مادمت بين أطهركم ،فاذا ذهب بي فعليكم بكتاب الله عزوجل احلوا حلاله وحرموا حرامه ، أتتكم الموتة، أتتكم بالروح والراحة ،كتاب من الله سبق، أتتكم فتن كقطع الليل المظلم،كلما ذهب رسل جاء رسل ،تناسخت النبوة فصارت ملكاً ،رحم الله من أخذها بحقها وخرج منها كما دخلها.

أمسك يا معاذ وأحص،قال :فلما بلغت خمسة قال:يزيد لابارك الله في يزيد،ثم ذرفت عيناه ﷺ ،ثم قال: نعي الى حسين،أتيت بتربته وأخبرت بقاتله ،والذي نفسي بيده لا يقتل بين ظهراني قوم لا يمنعونه الاخالف الله بين صدورهم وقلوبهم ،وسلط عليهم شرارهم وألبسهم شيعاً،ثم قال ﷺ:واهاً لفراخ آل محمد من خليفة مستخلف مترف ،يقتل خلفي ،وخالف الخلف .الحديث.

(7) "अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आस ﷺ की रिवायत मआ़ज़ बिन जबल ﷺ से :

सय्यिदना मआ़ज़ बिन जबल ﷺ बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ हमारे पास इस हाल में तशरीफ लाए के आप ﷺ का रंग बदला हुआ था । आपने फ़रमाया : "मैं मुहम्मद ﷺ हूं, मुझे कलिमात की इब्तिदा और इन्तिहा अ़ता की गई है। जब तक तुम्हारे दरमियान रहूं मेरी इताअ़त करते रहो, जब यहां से मुझे बुला लिया जाए तो तुम अल्लाह ﷻ की किताब लाज़िम पकडो, इस के हलाल को हलाल और इस के हराम को हराम समझो, तुम्हे भी मौत आएगी, सुब्ह व शाम गुज़रेगी, सुकून व राहत आएगी, तक़दीर का फैसला हो चुका है । तुम्हारे उपर तारिक रात की तरह फित्नों का नुज़ूल होगा, जब जब नर्मी जाएगी दोबारा आ जाएगी ।

नुबुव्वत का सिलसिला ख़त्म हो जाएगा और बादशाहत आ जाएगी । अल्लाह عزوجل उस शख़्स पर रहम फ़रमाए जो इसका हक अदा करे और जिस तरह इस में दाख़िल हुआ था इसी तरह इस से बाहर निकल आए ।",

"अय मआ़ज़ رضي الله عنه ! ठहरो और शुमार करो । रावी का बयान है के शुमार करते हुए जब मआ़ज़ पांच की गिनती तक पहूंचे । आप ﷺ ने फ़रमाया : **"यज़ीद और यज़ीदीयों में अल्लाह बरकत न दे ।" फिर आप की आंखों से आंसू बहने लगे और आप ﷺ ने फ़रमाया :** "मुझे हुसैन رضي الله عنه की शहादत की ख़बर दी गई है । मुझे उन की जाए शहादत की मिट्टी पैश की गई है और उन के क़ातिल के बारे में बताया गया है । क़सम है उस ज़ात की जिस के हाथ में मेरी जान है, जिस जमाअ़त के सामने हुसैन رضي الله عنه शहीद किये जाएंगे और वोह इस से मनअ़ नहीं करेगी तो अल्लाह عزوجل उन के दिलों और सीनों में इख़्तिलाफ पैदा कर देगा। उस के बदतरीन लोगों को उस पर मुसल्लत कर देगा, उसे टुकडे टुकडे कर देगा ।" इस के बा'द आप ﷺ ने फ़रमाया : "अफसोस ! आले मुहम्मद رضي الله عنه से ख़लीफा बनने वाले बच्चे को मेरे बा'द के लोग क़त्ल करेंगे ।"

(मुअ़जमुल कबीर 3:120 ह. 2461,20 ; 38-39, मक़्तलुल हुसैन लिल ख़्वारज़मी 1:264, तबरानी की सनद से, कन्ज़ुल उम्माल 11:166 ह. 31061, तबरानी से, मजमउज़्ज़वाइद 9:190)

(8) رجل من بنی اسد

عن العریانِ بن هیثم بن الاسود النخعی الکوفی الاعور ،قال:

"کان أبی یتبدی فینزل قریباً من الموضع الذی کان فیه معرکة الحسین علیه السلام،فکنا لانبدو الاوجدنا رجلاً من بنی أسد هناک،فقال له أبی:انی أراک ملازماً هذا المکان؟قال:بلغنی أن حسیناً یقتل هاهنا،فأنا أخرج لعلی أصادفه فأقتل معه ،فلما قتل الحسین علیه السلام قال أبی : انطلقوا ننظر هل الأسدی فی من قتل؟ فأتینا المعرکة فطوفنا فاذا الأسدی مقتول."

(8) "क़बीला बनू असद के एक शख़्स की रिवायत :

इर्यान बिन हैषम बिन असवद नख़ई कुफी अअ़-वर बयान करते हैं : मेरे वालिद एक दीहात में जाया करते थे जो उस जगह से क़रीब था जहां मा'रेका

हुसैन ﷺ बरपा हुआ था। हम जब भी उस दीहात में जाते क़बीला बनू असद के एक आदमी को वहां पाते थे। उस से मेरे वालिद ने पूछा : मैं देखता हूं के तुम इसी जगह को लाज़िम पकड़ कर बैठ गए हो। उस ने जवाब दिया के मुझे येह खबर मिली है के इसी जगह हुसैन ﷺ शहीद किये जाएंगे। मैं यहां इस लिये चल कर आता हूं ताके उन के साथ मिल जाउं और उन के साथ मैं भी शहीद किया जाउं। जब हुसैन ﷺ शहीद कर दिये गए तो मेरे वालिद ने कहा के चलकर देखें के क्या असदी भी शुहदा में से है। चुनांचे हम मारिके की ज़मीन पर आए, वहां तलाश किया तो देखा कि असदी भी शुहदा में से है।"

(तबक़ात इब्ने सअ़द, तरजमा इमाम हुसैन : 50 ह. 281, तारिख़े दमिश्क 14:216)

(9) صالح بن أربد النخعي،عن أم سلمة:

صالح بن أربد النخعي،عن أم سلمة رضى الله عنها،قالت:

"قال رسول الله ﷺ:اجلسى بالباب ولا يلجن على احد، فقمت بالباب اذ جاء الحسين عليه السلام،فذهبت أتناوله فسبقنى الغلام فدخل على جده،فقلت يا نبى الله –جعلنى الله فداک– أمرتنى ألايلج عليک أحد وان ابنک جاء فذهبت أتناوله فسبقنى، فلما طال ذلک تطلعت من الباب فوجدتک تقلب بکفيک شيئاً ودموعک تسيل والصبى على بطنک! قال:نعم،أتانى جبرئيل عليه السلام فأخبرنى أن أمتى يقتلونه، وأتانى بالتربة التى يقتل عليهافهى التى اقلب بكفى."

(9) "सालेह बिन अरबद नख़ई की रिवायत सय्यिदा उम्मे सलमा ﷺ से:

सालेह बिन अरबद नख़ई रिवायत करते हैं के सय्यिदा उम्मे सलमा ﷺ ने बयान किया के रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : "दरवाज़े पर बैठो, कोई मेरे पास अन्दर न आ सके।" मै दरवाज़े पर खड़ी हो गई। इतने में वहां हुसैन ﷺ आ गए। मैं उन्हें पकड़ने के लिये लपकी, लेकिन बच्चा मुझ से आगे निकलकर अपने नाना की गोद में जा बैठा। मैंने अ़र्ज़ किया : "अय अल्लाह ﷻ के नबी ﷺ ! मेरी जान आप ﷺ पर

कुरबान ! आप ﷺ ने मुझ से कहा था कि किसी को अन्दर न आने दूं, लेकिन आप ﷺ के बेटे आए, मैं उन्हें पकड़ने के लिये लपकी, लेकिन वोह मुझ से आगे निकल गए ।" फिर जब काफी देर हो गई तो मैंने कमरे में झांक कर देखा तो देखा के **आप ﷺ अपनी हथेलियां मल रहे हैं, आप ﷺ की आंखों से आंसु जारी हैं** और बच्चा आप की पीठ पर खेल रहा है । आप ﷺ ने जवाब दिया कि हां, ऐसा ही था । मेरे पास जिब्रईल عليه السلام आए थे, उन्होंने मुझे बताया कि आपकी उम्मत इन्हें क़त्ल करेगी और उन की जाए शहादत की मिट्टी ला कर मुझे दी, इसी अफसोस में मैं अपने हाथ मल रहा हूं ।"

(अल मुअ़जमुल कबीर 3:109 ह. 2820 और 32:328, मुस्नदे इब्ने रहाविया : 130 ह. 1897, मुसन्नफ इब्ने अबी शैबा 8:632 ह. 258, तबक़ात इब्ने सअ़द, तरजमा इमाम हुसैन 43-44 ह. 269, कन्ज़ुल उ़म्माल 13:658 ह. 37448)

(10) أبو وائل شقيق بن سلمة ، عن أم سلمة:

شقيق بن سلمة ، عن أم سلمة ، قالت:

" كان الحسن والحسين عليه السلام يلعبان بين يدى النبي ﷺ في بيتي ، فنزل جبرئيل عليه السلام فقال: يا محمد ، ان أمتک تقتل ابنک هذا من بعدک. وأومأ بيده الى الحسين عليه السلام . فبكى رسول الله ﷺ وضمه الى صدره ، ثم قال رسول الله ﷺ : وديعة عندک هذه التربة، فشمها رسول الله ﷺ وقال: ويح كرب وبلاء.

قالت: وقال رسول الله ﷺ : يا أم سلمة ، اذا تحولت هذه التربة دما فاعلمي ان ابني قد قتل ".

قال : فجعلتها أم سلمة في قارورة ، ثم جعلت تنظر اليها كل يوم وتقول : ان يوما تحولين دما ليوم عظيم."

(10) "अबु वाइल शक़ीक़ की रिवायत सय्यिदा उम्मे सलमा رضي الله عنها से :

शक़ीक़ बिन सलमा बयान करते हैं के सय्यिदा उम्मे सलमा رضي الله عنها ने फ़रमाया

हज़रत हसन और हज़रत हुसैन ﷺ मेरे घर में नबीए करीम ﷺ के सामने खेल रहे थे। इसी दौरान जिब्रईले अमीन ﷺ आ गए और उन्हों ने कहा : "अय मुहम्मद ﷺ ! आप की उम्मत आप के बा'द आप के इस बेटे को शहीद कर देगी।" और उन्हों ने हुसैन ﷺ की तरफ हाथ से इशारा कर के बताया। **येह सुन कर रसूलुल्लाह ﷺ रोने लगे और उन्हें अपने सीने से चिमटा लिया।** फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : ये मिट्टी तुम्हारे पास एक अमानत है। रसूलुल्लाह ﷺ ने मिट्टी सूंघी और फ़रमाया : "अफसोस ! येह तो सरापा करब व बला है।"

सय्यिदा उम्मे सलमा ﷺ बयान करती हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : "अय उम्मे सलमा ﷺ ! जब येह मिट्टी खून में बदल जाए तो समझ लेना के मेरे बेटे हुसैन ﷺ शहीद कर दिये गए।" रावी का बयान है के सय्यिदा उम्मे सलमा ﷺ ने वोह मिट्टी एक शीशे में रख ली, उसे रोज़ पाबंदी से देखती रहतीं थी और कहा करती थीं के जिस दिन येह मिट्टी खून में बदल जाए वोह बड़ा भारी दिन होगा।"

(अल मुअ़जमुल कबीर 3:108 / ह. 2817, तारीखे दिमश्क 14:192। बुग्यतुत्तलब 2:2599, व तहज़ीबुल कमाल 2:409, व तेहज़ीबुत्तहजीब 2:300)

(11) عائشة :

أبـو سلمة بن عبدالرحمن بن عوف ، عن ام المومنين عائشة رضى الله عنها:

أبو سلمة بن عبدالرحمن ، عن ام المومنين عائشة رضى الله عنها ، قالت: " ان رسـول الـلـه ﷺ أجـلـس حسينا على فخذه ، فجاء جبرئيل عليه السـلام اليـه ، فقال : هذا ابنک ؟ قال : نعم ، قال : أما ان أمتک ستقتله بعدک، فـدمـعـت عيـنـا رسـول الـلـه ﷺ ، فقال جبرئيل عليه السلام : ان شئت أريتک الأرض التى يقتل فيها ، قال : نعم ، فأراه جبرئيل عليه السلام ترابا من تراب الطف"

(11) "अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान की रिवायत उम्मुल मु'मिनीन सय्यिदा आ़एशा ﷺ से : अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान से रिवायत है के उम्मुल मु'मिनीन सय्यिदा आ़एशा ﷺ ने फ़रमाया : "एक बार रसूलुल्लाह ﷺ हुसैन ﷺ को अपनी रानपर बिठाए हुए थे के

इतने में जिब्रईल عليه السلام आप ﷺ के पास आए और पूछा : 'क्या येह आप का नवासा है ?' आप ﷺ ने फ़रमाया : 'हां ।' जिब्रईल عليه السلام ने कहा के **आप ﷺ के बा'द आप की उम्मत इन को शहीद कर देगी। येह सुन कर रसूलुल्लाह ﷺ की आंखें अश्कबार हो गईं ।** जिब्रईल عليه السلام ने कहा के अगर आप चाहें तो मैं आप को उस सरज़मीन की मिट्टी ला दूं जहां इन को शहीद किया जाएगा । आप ﷺ ने फ़रमाया : 'लाओ दिखाओ ।' फिर जिब्रईल عليه السلام आप ﷺ को सरज़मीन तिफ़ की मिट्टी दिखाई ।"

(मक़्तलुल इमामुल हुसैन लिल ख़्वारज़मी 1:233 / अल मुअ़जमुल औसत 6:249, दलाइलुन्नुबुव्वाह लिल बैहक़ी 6:469, इललुद्दारकुतनी 5 : अल वरक़ ह. 38 / अत्तबक़ात इब्ने सअ़द : 46)

(12) عروة بن الزبير ، عن عائشة:

عروة بن الزبير، عن عائشة، قالت:

" دخل الحسين بن علي عليه السلام على رسول الله ﷺ وهو يوحى اليه ، فنزا على رسول الله ﷺ وهو منكب، ولعب على ظهره ، فقال جبرئيل عليه السلام لرسول الله ﷺ: أتحبه يا محمد ؟ قال ﷺ: يا جبرئيل ، وما لي لا أحب ابني!! قال : فان أمتك ستقتله من بعدك . فمد جبرئيل عليه السلام يده فأتاه بتربة بيضاء ، فقال : في هذه الأرض يقتل ابنك هذا يا محمد ، واسمها الطف.

فلما ذهب جبرئيل عليه السلام من عند رسول الله ﷺ خرج رسول الله ﷺ والتربة في يده يبكي ، فقال : يا عائشة ، ان جبرئيل عليه السلام أخبرني أن الحسين ابني مقتول في أرض الطف، وأن أمتي ستفتن بعدي.

ثم خرج الى أصحابه فيهم علي عليه السلام وأبوبكر وعمر وحذيفة وعمار وأبوذر..وهو يبكي ، فقالوا: ما يبكيك يا رسول الله ؟ فقال : أخبرني جبرئيل أن ابني الحسين يقتل بعدي بأرض الطف ، وجاءني بهذه التربة وأخبرني أن فيها مضجعه".

(12) “उर्वह बिन ज़ुबैर की रिवायत उम्मुल मु’मिनीन सय्यिदा आएशा ؓ से :

उर्वह बिन ज़ुबैर बयान करते हैं के उम्मुल मु’मिनीन सय्यिदा आएशा ؓ ने फ़रमाया : ‘एक बार हुसैन ؓ नबीए अकरम ﷺ के पास आए । उस वक़्त आप पर वही का नुज़ूल हो रहा था । वोह रसूलुल्लाह ﷺ के उपर सवार हो गए क्यूं के उस वक़्त आप ﷺ झुके हुए थे । हुसैन ؓ आप ﷺ की पुश्त मुबारक पर खेलने लगे । जिब्रईल ؑ ने नबी ﷺ से पूछा : “अय मुहम्मद ﷺ ! आप इन से बहोत मुहब्बत करते हैं ?” आप ﷺ ने जवाब दिया : “जिब्रईल ؑ ! येह मेरे बेटे हैं भला मैं इन से मुहब्बत क्यूं न करुंगा ।” जिब्रईल ﷺ ने कहा के “आपकी उम्मत आप की वफात के बा’द इन को क़त्ल कर देगी ।” येह केह कर उन्होंने हाथ बढा कर सफैद मिट्टी की एक मुट्ठी उठाई और कहा के अय मुहम्मद ﷺ ! यही वोह सरज़मीन है जहां आप ﷺ के बेटे हुसैन ﷺ को क़त्ल किया जाएगा । उस जगह का नाम तिफ है ।

जब जिब्रईल ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ के पास से उठ कर चले गए तो आप ﷺ अपने हाथ में मिट्टी लिये हुए और रोते हुए बाहर निकले । और कहा : “अय आएशा ؓ ! जिब्रईल ؑ ने अभी अभी मुझ़ ख़बर दी है के मेरे बेटे हुसैन ؓ को सरज़मीन तिफ में क़त्ल किया जाएगा और मेरी उम्मत मेरे बा’द फित्नों से दो-चार हो जाएगी ।”

फिर आप ﷺ अपने असहाब की तरफ गए जिन में अ़ली, अबू बकर, उ़मर, हुज़ैफा, अ़म्मार और अबूज़र ؓ थे, **उस वक़्त आप ﷺ रो रहे थे ।** लोगोंने अ़र्ज़ किया : “अय अल्लाह عزوجل के रसूल ﷺ ! क्यूं रो रहे हैं ?” आप ﷺ ने फ़रमाया के “मुझे जिब्रईल ؑ ने बताया है के मेरा बेटा हुसैन ؓ मेरे बा’द सरज़मीन तिफ़ में क़त्ल कर दिया जाएगा । वोह मेरे पास येह मिट्टी लेकर आए थे और बताया के इसी मैं उसे लिटाया जाएगा ।”

(अल मुअ़जमुल कबीर 3:107 / ह. 2814 । मजमउ़ज़्ज़वाइद 9:187-188, फैज़ुल क़दीर 1:266)

- عن ابن عباس قال: رأيت النبي صلى الله عليه وسلم في المنام بنصف النهار أشعث أغبر معه قارورة فيها دم يلتقطه أو يتتبع فيها شيئا قال قلت يا رسول الله صلى الله عليه وسلم ما هذا قال دم الحسين وأصحابه لم أزل أتتبعه منذ اليوم قال عمار فحفظنا ذلك اليوم فوجدناه قتل ذلك اليوم [مسند احمد: 2165 (242/1)، قال الشيخ زبير عليزئي في فضائل الصحابة و الشيخ شعيب الأرنؤوط: إسناده صحيح]

* इमाम अहमद बिन हम्बल ﵀ सय्यिदना इब्ने अब्बास ﵄ से रिवायत करते है की, सय्यिदना अब्बास ﵄ फ़रमाते है की 'एक रोज़ दोपहर के वक़्त ख़्वाब में मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को देखा की आपके गेसूए मुअत्तर (जुल्फ मुबारक व दाढी मुबारक के बाल) बिखरे हुए है और गुबार आलूद है, आपके हाथों में खून से भरी एक शीशी है, तो मैंने पूछा : 'मेरे मां-बाप आप ﷺ पर क़ुरबान ! ये क्या है ?' तो आप ﷺ ने फ़रमाया, हुसैन ﵄ और उनके साथियों का खून है, मैं इसे जमा कर रहा हूं । **(मुस्नद अहमद:2165 (1/242) (शैख़ जुबेर अ़ली ज़ई और शैख़ अरनोवत ने इस हदीष की सनद को सहीह कहा है ।)**

(1) رؤيا عبدالله بن عباس:

عن عمار بن أبي عمار ، عن ابن عباس، قال:

" رأيت النبي ﷺ فيما يرى النائم بنصف النهار وهو قائم أشعث أغبر، بيده قارورة فيها دم. فقلت :

بأبي أنت وأمي يا رسول الله ما هذا؟ قال : هذا دم الحسين وأصحابه لم أزل ألتقطه منذ اليوم .فأحصينا ذلک اليوم فوجدوه قتل في ذلک اليوم".

(1) सय्यिदना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास ﵄ का ख़्वाब :

"अ़म्मार बिन अबी अ़म्मार बयान करते हैं के इब्ने सय्यिदना अ़ब्बास ﵄ ने फ़रमाया : मैं ने दोपहर के वक़्त क़ैलूला करते हुवे ख़्वाब में देखा के नबीए अकरम ﷺ बिखरे बाल और गर्द में लिपटे हुवे कपड़े में खड़े हैं । आप के हाथ में एक शीशी है जिस में ख़ून है । मैं ने अ़र्ज़ किया : मेरे मां बाप आप ﵁ पर क़ुरबान ! ए अल्लाह के रसूल ﷺ, येह क्या है ? आप ﷺ ने फ़रमाया : येह हुसैन ﵁ और उन के साथियों का ख़ून

है जिसे मैं शहादत के दिन से लिये हुवे हूँ ।" मैंने उसे शुमार किया तो माअ़लूम हुवा के उसी दिन उन की शहादत हूई थी ।"

(तबक़ात इब्ने सअ़द : 46-47/ह 272 । मुस्नदे अहमद 1:283, फज़ाइलुस् सहाबा 2:779 / ह. 1381 । अल इस्तीआब 1:395-392 । मुस्नद अहमद 1:242, फज़ाइलुस्सहाबा 2:778 / ह. 1380 अल मुस्तदरक अलस्सहीहैन 4:397 । दलाइलुन्नुबुव्वाह लिल बैहकी 7:48 । मुसनदे अ़ब्द बिन हमीद 235/180 । फज़ाइलुस्सहाबा 2:784 / ह. 1396 तारीख़े दिमश्क 14:237 । अल मुअ़जमुल कबीर 3/110, दलाइलुन्नुबुव्वाह लिल बैहकी 6:471 अल मुअजमुल कबीर 12/143,144 अल मुअजमुल कबीर 3/110, 12, 143, 144 फज़ाइलुस्सहाबा 2:781/ ह. 1389, तारीख़े दिमश्क 14/237, तारीख़े बग़दाद 1:152)

(2) رؤيا أم سلمة

عن سلمى ، قالت:

" دخلت على أم سلمة وهى تبكى ، فقلت: ما يبكيك؟ قالت: رأيت رسول الله ﷺ.. تعنى فى المنام ..وعلى رأسه ولحيته التراب، فقلت : مالك يا رسول الله ؟ قال: شهدت قتل الحسين آنفا".

(2) "सय्यिदा उम्मे सलमा ﵂ का ख़्वाब :

सय्यिदा सलमा ﵂ बयान करती हैं कि मैं सय्यिदा उम्मे सलमा ﵂ की ख़िदमत में हाज़र हूई । देखा के वोह रो रही हैं । मैंने रोने की वजह माअ़लूम की तो उन्हों ने फ़रमाया के मैंने नबी ﷺ को ख़्वाब में देखा है । आप ﷺ के सर मुबारक और दाढी ख़ाक आलूद हैं । मैंने पूछा के अय अल्लाह ﷻ के रसूल ﷺ ! येह क्या हुवा है ? आप ﷺ ने फ़रमाया : मैं अभी अभी हुसैन ﵁ की शहादत देख कर लौटा हूं।"

(सुन्नन तिरमिज़ी 5:323 / ह. 3860, दलाइलुन्नुबुव्वाह लिल बैहक़ी 7:47 । अत्तारीख़ुल कबीर 3:324 / तरजमा 1098 । अल मुअ़जमुल कबीर 32:373 । तहज़ीबुल कमाल 9:187, तारीख़े दिमश्क 14:238 । अल मुस्तदरक अलस्सहीहैन 4:19)

(3) وقال البخاری فی ترجمة رزين بياع الأنماط من تاريخ الكبير:
قال الأشج ، حدثنا أبو خالد ، قال حدثنا رزين ، قال : حدثنی سلمی:
" دخلت على أم سلمة تبكی ، قالت : رأيت النبی ﷺ وعلى رأسه ولحيته التراب، قال: شهدت قتل الحسين آنفا".

(3) "इमाम बुख़ारी तारीख़े कबीर में '**रज़ीन बयाअ़लअन्मात**' के तरजुमा में लिखते हैं के अशज ने बयान किया, उस ने कहा के हम से अबू ख़ालिद ने बयान किया, उसने बताया के हम से रज़ीन ने बयान किया, वोह केहते है के मुझ से सलमा ने बयान किया कि :

मैं सय्यिदा उम्मे सलमा ﵂ की ख़िदमत मैं हाज़िर हूई । देखा के वोह रो रही हैं । उन्होंने फ़रमाया के मैं ने नबी ﷺ को ख्वाब में देखा है । आप ﷺ के सरमुबारक और दाढी ख़ाक आलूद हैं । आप ﷺ ने फ़रमाया : मैं अभी अभी हुसैन ﵁ की शहादत देख कर लौटा हूं ।" **(अत्तारीख़ुल कबीर 3:324 / तर्जमा 1098)**

शहादते हुसैन से पेहले इमाम मौला अ़ली का ग़मे हुसैन में रोना
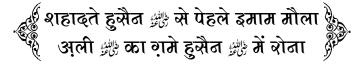
* इब्ने सअ्द - ने शअ्बी से बयान किया है के सिफ़्फ़ीन के तरफ जाते हुए हजरत अ़ली करबला से गुजरे। जब फुरात के किनारे नैनवा बस्ती से गुजरे तो मौला अ़ली ने वहां खडे होकर उस ज़मीन का नाम पूछा **तो आप को बताया गया की इसे 'करबला' कहते है। तो आप रो पडे। यहां तक के आपके आंसूओ से ज़मीन तर हो गई।** फिर फ़रमाया : **मैं रसूलुल्लाह के पास गया तो आप रो रहे थे।** मैंने अर्ज किया 'आप किस वजह से गरिया कुनां है ?' फ़रमाया : 'अभी जिब्रइल ने आकर खबर दी है की मेरा बेटा हुसैन फुरात के किनारे एक जगह क़त्ल होगा, जिसे करबला कहा जाता है, फिर जिब्रइल ने एक मुट्ठी में मिट्टी पकड़कर मुझे सुंघाई तो मैं अपने आंसूओ को रोक नहीं सका।'
* हजरत असबग बिन नबाता - फ़रमाते है, की जब हम मौला अ़ली के साथ जंगे सिफ़्फ़ीन से वापस आए तो करबला से गुजर रहे थे जब कब्रे हुसैन की जगह आई तो हजरत अ़ली रुक गए और रोकर शुहदाए करबला के मुतालिक फ़रमाया : 'यहां उन शुहदाए किराम के उंट बांधे जाएगें, यहां उनके कज़ावें रखने की जगह है, यहां उनका खून बहने का मकाम है, कितने जवान आले मुहम्मद के साथ खुले मेदान में क़त्ल किए जाएंगे उन पर ज़मीन व आसमान रोएंगे।'

(दलाइलुन्नुबुव्वाह, अबू नु'ऐम अस्फहानी, सफा-509)

(खसाइसे कुबरा, जिल्द-दुवम, सफा-126) (सिर्रुश्शहादतैन, सफा-3)

عبدالله بن عباس،عن علی علیه السلام:

ذکرشیخ الاسلام الحاکم الجشمی:

"أن أمیرالمؤمنین علیاً علیه السلام لماسار الی صفین نزل بکربلاء، وقال لابن عباس :أتدری ماھذه البقعة؟قال: لا،قال:لوعرفتھا لبکیت بکائی،ثم بکی بکاءً شدیداً،ثم قال: مالی ولآل أبی سفیان؟ثم التفت الی الحسین علیه السلام وقال:صبراً یا بنی ،فقد لقی أبوک منھم مثل الذی تلقی بعده."

* तर्जमा :

"अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ﷺ की रिवायत अ़ली ﷺ से :

शैख़ुल इस्लाम हाकिम जश्मी ने ज़िक्र किया है :

अमीरुल मु'मिनीन अ़ली ﷺ जब सिफ़्फ़ीन के लिये रवाना हुए तो रास्ते में करबला में उतरे और सय्यिदना इब्ने अ़ब्बास ﷺ से कहा : "जानते हो येह कौनसी जगह है ?" उन्हों ने जवाब दिया : "नहीं ।" मौला अ़ली ﷺ ने कहा के **अगर इस जगह के बारे में मा'लूम हो जाए तो मेरी तरह तुम भी आंसू** बहाओगे । **येह केह कर वोह शिद्दत से रोने लगे** । उस के बा'द फ़रमाया : "**मेरा और आले अबी सूफ़ियान का क्या झगड़ा है ?**" फिर हुसैन ﷺ की तरफ रुख़ किया और फ़रमाया : "**मेरे बेटे सब्र करना । आले अबी सूफ़ियान से तुम्हारे बाप को जिस तरह की अज़िय्यत पहूंची है उसी तरह की अज़िय्यत तुम्हें भी उन से मेरे बा'द पहूंचेगी ।**"

(मक्तले हुसैन, ख़्वारिज़्मी 1:236 ह. 10)

فی تذکرة الخواص:وقد روی الحسن بن کثیر وعبدخیر قالا:

"لماوصل علی علیه السلام الی کربلاء وقف وبکی وقال: بأبیه أغیلمة یقتلون ھاھنا،ھذا مناخ رکابھم،ھذا موضع رحالھم،ھذا مصرع الرجل،ثم ازداد بکاؤه."

✱ तर्जुमा :

"तज़किरतुल ख़वास में है के हसन बिन कषीर और अ़ब्दे ख़ैर ने बयान किया : **"जब अ़ली ﷷ करबला पहोंचे तो वहां ठहर गए और रोने लगे और फ़रमाया :** 'इस के बाप की कसम ! चन्द बच्चे यहां शहीद किये जाएंगे । येह उन की सवारीयों के रुकने की जगह है, यहां वोह पडाव डालेंगे, यहां उस ख़ास इन्सान को पछाड़ा जाएगा । **येह केह कर वोह शिद्दत से रोने लगे ।"**

(तज़किरतुल ख़वास : 250)

الأصبغ بن نباتة،عن علی علیه السلام:

عن الأصبغ بن نباتة،قال:

"أتینا مع علی علیه السلام فمررنا بموضع قبرالحسین علیه السلام،فقال علی علیه السلام:هاهنا مناخ رکابهم،وهاهنا موضع رحالهم، وهاهنا مهراق دمائهم،فتیة من آل محمد یقتلون بهذه العرصة تبکی علیهم السماء والأرض."

✱ तर्जुमा :

"असबग़ बिन नबातह की रिवायत मौला अ़ली ﷷ से :

असबग बिन नबातह ﷺ बयान करते हैं के हम मौला अ़ली ﷷ के साथ चल रहे थे के हमारा गुजर उस जगह से हुवा जहां आज हुसैन ﷷ की क़ब्र है । मौला अ़ली ﷷ ने फ़रमाया : यहां उन की सवारीओं की लगामें खींची जाएंगी, इस जगह वोह मुक़ीम होंगे और इसी जगह उन का ख़ून बहाया जाएगा । आले मुहम्मद ﷺ के बच्चे इसी मैदान में शहीद किये जाएंगे और आसमान जमीन उन पर ख़ून से आंसू बहाएंगे ।"

(दलाइलुन्नुबुव्वाह लिल अबी नु'एम अल अस्फहानी 2:541-542, ज़ख़ाइरुल उ़क़बा : 97 यनाबीउ़ल मवद्दत 2:186 ह. 541, अल फुतूह लिल इब्ने आसिम 2:462)

نجیّ،عن علی علیه السلام:

عبدالله بن نجیّ ،عن أبیه:

"أنه سار مع علی علیه السلام- وکان صاحب مطهرته-فلما

حاذى نينوى وهو منطلق الى صفين،فنادى على عليه السلام:اصبر أبا عبدالله،اصبر أبا عبدالله بشط الفرات،قلت:وماذا؟قال:دخلت على النبى ﷺ ذات يوم وعيناه تفيضان،قلت:يانبى الله أغضبك أحد؟ ماشأن عينيك تفيضان؟قال:بل قام من عندى جبرئيل قبل. فحدثنى أن الحسين يقتل بشط الفرات،قال:فقال:هل لك أن أشمك من تربته؟ قال: قلت: نعم،فمد يده فقبض قبضة من تراب فأعطانيها،فلم أملك عينى أن فاضتا."

قال الضياء المقدسى الحنبلى فى الاحاديث المختارة: اسناده حسن.

✱ तर्जुमा :

"नज्जा की रिवायत मौला अ़ली عليه السلام से :

अ़ब्दुल्लाह बिन नज्जा अपने बाप से रिवायत करते हैं कि वोह मौला अ़ली عليه السلام के साथ रवाना हुए और मेरे वालिद उनकी तहारत वगैरा के ज़िम्मेदार थे, सिफ़्फ़ीन जाते हुए जब वोह नैनवा के पास से गुज़रे तो आवाज़ देते हुए फ़रमाया : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह (इमाम हुसैन رضي الله عنه की कुन्नियत) ! दरियाए फरात के किनारे सब्र करना, ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह दरियाए फुरात के किनारे सब्र करना ।" मैंने अ़र्ज किया : "येह क्या बात हुई ?" फ़रमाया : **"मैं एक दिन नबी ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, उस वक़्त आप की दोनों आंखों से आंसू जा रहे थे ।"** मैंने पूछा : 'अय अल्लाह ﷻ के नबी ﷺ ! आप को किसने नाराज़ कर दिया है ? आप की आंखों से आंसू क्यूं बेह रहे हैं ?' आप ﷺ ने फ़रमाया : 'अभी अभी जिब्रईल عليه السلام मेरे पास से उठ कर गए हैं । उन्हों ने मुझ से कहा के हुसैन رضي الله عنه दरियाए फुरात के किनारे शहीद किये जाएंगे । और येह भी कहा के अगर चाहें तो उस सरज़मीन की मिट्टी आप को सुंघने के लिये ला दूं ।' मैंने जवाब दिया के 'ज़रूर ला दो ।' फिर उन्हों ने हाथ बढा कर एक मुट्ठी मिट्टी मेरे सामने रख दी । येह देख कर मुझे अपनी आंखों पर काबू नहीं रहा ।"

ज़ियाअ मुकद्सी हम्बली ने "अल अहादिषुल मुख़्तारा" में इस रिवायत की सनद को हसन बताया है ।

(मुस्नद अहमद 1:85, मुसन्निफ इब्न अबी शैबा 8:632 ह. 259, मुस्नद अबी यअ़ला 1:298 ह. 363, मुअजमुल कबीर 3/105, ह. 2811, तारीख़े दिमश्क 178/14 अल बिदाया वन-निहाया 217/8, तहजीबुल कमाल 6:407, सियरे अअ़लामुन्नुबला 3:288, अल अहादिषुल मुख़्तारा 2:375 ह. 758)

उम्मुल मु'मिनीन सय्यिदा उम्मे सलमा رضی اللہ عنہا का ग़मे हुसैन رضی اللہ عنہ में गिरया

* अल्लामा ज़हबी رحمۃ اللہ علیہ ने लिखा है, -

عبد الحميد بن بَهْرام ، وآخر ثقة ، عن شهْرِ بن حَوْشَب ، قال: كنتُ عند أُمِّ سلمةَ زوجِ النبيِّ ﷺ حين أتاها قتلُ الحسين ، فقالت : قد فعلوها ؟! ملأ اللّهُ بيوتَهم وقبورَهم ناراً ، ووقعتْ مَغْشِيَّةً عليها ، فقمنا .

अब्दुल हमीद बिन बहराम और एक दूसरे मो'तबर रावी शहर बिन होशब से नक़्ल करते है के इब्ने होशब ने कहा के, "मैं हज़रत उम्मे सलमा رضی اللہ عنہا ज़ौजए नबी ﷺ के पास उस वक़्त मौजूद था जब उनके पास हज़रत हुसैन رضی اللہ عنہ के क़त्ल की ख़बर पहुंची तो उन्हों ने फ़रमाया की : 'उन लोगों ने ये काम अन्जाम दे दिया ? अल्लाह عزوجل उनके घरों को और उनकी कब्रो को आग से भर दे ।' और वोह बेहोश होकर गिर गई, हम उठकर चले आए ।"

(सियरे अअ्लामुन्नुबला, जिल्द-सोम, सफा-318)

(इसका Scan Page सफा नम्बर 36 पर है ।)

* एक और रिवायत में है की उम्मुल मु'मिनीन हजरत उम्मे सलमा رضی اللہ عنہا फ़रमाती है की जब क़त्ले हुसैन رضی اللہ عنہ की रात आई तो मैं रो पडी और मैंने बोतल को खोला तो मिट्टी ख़ून होकर बह पडी ।

(सवाईके मुहर्रिकह, हाफिज ईब्ने हजर मक्की, सफा-641)
(बहवाला : ज़वाहदुल मुस्नद इमाम अहमद बिन हम्बल)

سِيَرُ أَعْلَامِ النُّبَلَاءِ

تَصْنِيفُ

الإمام شمس الدين محمد بن أحمد بن عثمان الذهبي

المتوفى

٧٤٨ هـ - ١٣٧٤ م

أشرف على تحقيق الكتاب وخرّج أحاديثه

شعيب الأرنؤوط

حقق هذا الجزء

محمد نعيم العرقسوسي و مأمون صاغرجي

الجزء الثالث

مؤسسة الرسالة

ابنُ ثمانٍ وخمسين . وماتَ لهاحَسن ،وقُتـل لهـا حُسين(١) .

قلتُ : قولهُ : ماتَ لها حسن : خطأ ، بل عاشَ سبعاً وأربعين سنة .

قال الجماعةُ : مات يوم عاشوراء سنة إحدىٰ وستين ، زاد بعضُهم يوم السبت وقيل : يوم الجمعة ، وقيل: يوم الاثنين.

ومولده في شعبان سنة أربع من الهجرة .

عبد الحميد بن بَهْرام ، وآخر ثقة ، عن شهْر بن حَوْشَب ، قال: كنتُ عند أُمِّ سلمةَ زوجِ النبيِّ ﷺ حين أتاها قتلُ الحسين ، فقالت : قد فعلوها ؟! ملأ اللّهُ بيوتَهم وقبورَهم ناراً ، ووقعتْ مَغْشيَّةً عليها ، فقمنا .

ونقل الزبير لسُليمان بن قَتَّة(٢) يَرثي الحُسين :

وإنَّ قَتِيلَ الطَّفِّ مِنْ آلِ هاشِمٍ أَذَلَّ رِقـاباً مِنْ قُـرَيْشٍ فَـذَلَّتِ

فَإِنْ يُتبِعُوهُ عَائِذَ البَيْتِ يُصْبِحُوا كَعَادٍ تَعَمَّتْ عَنْ هُدَاها فَضَلَّتِ

مَرَرْتُ علىٰ أبياتِ آلِ مُحمَّدٍ فَـأَلْفَيتُها أَمْثـالَهَا حِينَ حَلَّتِ(٣)

---

(١) « الطبراني » (٢٧٨٤) .

(٢) بفتح القاف ومثناة من فوق مشددة كما ضبطه ابن ناصر الدين في « توضيح المشتبه » ورقة ٢١٥ ، وابن حجر في « تبصير المنتبه » ١١٢٢/٣ ، وابن الجزري في « طبقات القراء» ٣١٤/١ ، وقد تصحف في « تعجيل المنفعة » إلى « قنة » ، وهو سليمان بن قتة التيمي مولاهم البصري ، روى عن ابن عباس ، وعمرو بن العاص وغيرهما ، روى عنه موسى بن أبي عائشة وغيره ، وكان فارساً شاعراً ، قال ابن الجزري : عرض القرآن على ابن عباس ثلاث عرضات ، وعرض عليه عاصم الجحدري ، مترجم في « تاريخ البخاري » ٣٢/٤ ، و « الجرح والتعديل » ١٣٦/٤ .

والأبيات منسوبة له في « الاستيعاب » ٣٧٩/١ ، و « البداية » ٢١١/٨ ، و « تهذيب ابن عساكر » ٣٤٥/٤ ، ٣٤٦ ، والأول والثالث والرابع والخامس منها في « حماسة أبي تمام » ٩٦١/٢ ، ٩٦٢ بشرح المرزوقي . ونسبه ياقوت الحموي إلى أبي دعبل ، ولم يتابع على ذلك .

(٣) رواية الشطر الثاني في « الحماسة » :

فلم أرها أمثالها يوم حُلَّتِ

قال المرزوقي : يريد أنه قد ظهر عليها من آثار الفجع والمصيبة ما صارت له دهشاً ، =

शुहदाए किराम का ग़म करना नबी ﷺ व बिन्ते नबी ﷺ फ़ातिमा ज़हरा عليها السلام का तरीका

* इमाम बुखारी رحمه الله अपनी सहीह मे शुहदाए बद्र رضي الله عنهم के लिये नबीए करीम ﷺ के सामने नौहा (मरषिया) पढने के बयान में एक हदीष लाए हैं ।

حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ،
حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ ذَكْوَانَ، قَالَ: قَالَتِ الرُّبَيِّعُ
بِنْتُ مُعَوِّذِ بْنِ عَفْرَاءَ: جَاءَ النَّبِيُّ صَلَّى
اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَدَخَلَ حِينَ بُنِيَ عَلَيَّ،
فَجَلَسَ عَلَى فِرَاشِي كَمَجْلِسِكَ مِنِّي، فَجَعَلَتْ
جُوَيْرِيَاتٌ لَنَا يَضْرِبْنَ بِالدُّفِّ وَيَنْدُبْنَ مَنْ
قُتِلَ مِنْ آبَائِي يَوْمَ بَدْرٍ، إِذْ قَالَتْ إِحْدَاهُنَّ:
وَفِينَا نَبِيٌّ يَعْلَمُ مَا فِي غَدٍ، فَقَالَ: دَعِي هَذِهِ،
وَقُولِي بِالَّذِي كُنْتِ تَقُولِينَ .

* **तर्जमा :** इमाम बुख़ारी ﷺ रिवायत करते हैं : 'हमे मुसद्दद ने हदीष बयान की उन्होंने कहा : हमें बशर इब्ने मुफद्दिल ने हदीष बयान की, उन्होंने कहा हमें ख़ालिद बिन ज़कवान ने हदीष बयान की, उन्होंने कहा : रुबीअ् बिन्ते मुअव्विज़ बिन अफ़रा ने बताया : ' जब मुझे मेरे ख़ाविन्द के पास पेश किया गया उस मौका पर नबी ﷺ तशरीफ लाए, सो आप ﷺ मेरे बिस्तर पर बैठ गए जिस तरह तुम (ख़ालिद बिन ज़कवान) मेरे करीब बैठे हो, उस वक़्त लडकिया डफ बजा रही थी और गज़वए बद्र में जो मेरे आबाअ् कत्ल किये गए थे उन पर नौहा कर रही थी, अचानक उनमें से एक लडकी ने ये शैर पढा :' हम में ऐसे नबी मौजूद है जिनको आनेवाले कल का इल्म है, तो आप ﷺ ने फ़रमाया : ये शैर न पढो और जो अशआर तुम पेहले पढ रही थी वही पढती रहो ।

(सहीह बुख़ारी : बाब : निकाह और वलीमा की तक़रीब में डफ बजाना, हदीष - 5147)

- **तशरीह :** इस हदीष को इमाम बुख़ारी ﷺने बाब 'निकाह और वलीमा की तक़रीब में डफ बजाना' में बयान किया है जिसमें उन्होंने निकाह जैसी ख़ुशी के मौके पर नबी ﷺ के सामने डफ बजाया जाता था और आपने इससे मना नहि किया ये सहीह हदीष से बयान किया है ।
- इस हदीष को इसी सनद इमाम तिरमीज़ीने अपनी 'सुनन' में बयान किया है और इस हदीष को 'हसन सहीह' कहा है ।

(सुनन तिरमिज़ी, हदीष 1090)

- इस हदीष को इब्ने माजा ﷺ ने एक और सनद से बयान किया है और हदीष सहीह है ।

(इब्ने माजा : गाने और डफ बजाने के बयान में, दिल्द-3, हदीष-1897)

- इस हदीष को बुख़ारी की ही सनद से इब्ने दाउद ﷺ ने अपनी 'सुनन' मे नक़्ल किया है और हदीष सहीह है ।

(सुनन इब्ने दाउद, बाब : गाने के बयान में, जिल्द-4, हदीष - 4922)

- इस हदीष में जो वाक़ेआ बयान हुआ के रावी रुबीअ् बिन्ते मुअव्विज़ की शादी के मौक़े पर नबी ﷺ तशरीफ लाते है और आपके सामने बच्चियाँ शुहदाए बद्र ﷺ के ग़म में मरषिया पढती है मगर अचानक जब वो आप ﷺ की

शानमें मन्कबत पढना शुरु करती है तो नबी ﷺ इनको रोक कर वापस वही मरषिया जो जंगे बद्र के शुह्दा के ग़म मे पढा गया वो पढने का हुक़्म देते है, ईससे पता चला के शुहदाए इस्लाम के ग़म में मरषिये सुनना नबी ﷺ की सुन्नत है । बेशक शुहदाए इस्लाम ज़िन्दा है मगर उनका ग़म ताजा करने के लिए मरषिया या नौहा पढ सकते है, इस फे'ल से नबी ﷺ ने रोका नहीं बल्के आपने बज़ाते खुद इसको सुनने की फ़रमाइश की है ।

* फतवा रिज़वीय्या में भी मरषिये पढने का जिक्र :

- इस हदीष का ज़िक्र अल्लामा अहमद रिज़ा ख्रान बरेल्वी رحمة الله عليه ने भी फतवा रिजवीय्या जिल्द-23 में किया है जिसमें उन्होने नबीए करीम ﷺ के सामने एक निकाह के मोके पर बच्चीयों का डफ बजाकर शुहदाए बद्र رضي الله عنهم की शान मे मरषिये पढना नक़्ल किया है इससे ये बात साबित है के शुहदाए इस्लाम के ग़म मे अश्आर या'नी मरषिये सुनना नबी ﷺ की सुन्नत है । अफसोस खुद को अहमद रिजा बरेल्वी رحمة الله عليه के चाहनेवाला बतानेवाली जमाअत का एक गिरोह नबी ﷺ के शहीद नवासे के शहादत कि अस्रा में नए साल की मुबारकबादी देने में मशगूल रहेता है । अल्लाह عزوجل हम सबको नेक हिदायत अता फ़रमाए । आमीन.
- यहाँ फतवा रिज़वीय्या के scan page पेश है :

منع کرتے کرتے اپنا کام کر گزریں گی بلکہ شریف زادیوں کا ان آوارہ بدوضعوں کے سامنے آنا ہی سخت بیہودہ وبیجا ہے۔ صحبت بد زہر قاتل ہے اور عورتیں نازک شیشیاں ہیں جن کے ٹوٹ جانے کے لئے ایک ادنی سی ٹھیس بھی بہت ہوتی ہے اسی لئے حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے یاانجشۃ رُوَیْدًا بالقواریر[1] (اے انجشہ! ٹھہر جاؤ کہیں کانچ کی شیشیاں ٹوٹ نہ جائیں۔ت) فرمایا۔

هذا كله ظاهر بين عند من نور الله تعالٰى بصيرته وجميع مانهينا عنه فان عليه دلائل ساطعة من القرآن العظيم والحديث الكريم والفقة القويم بيدان وضوح الحكم اغنانا عن سردها فلنذكر بعض دلائل علی ماذ كرنا اباحته فانا نرٰی ناسا يشد دون الامر يطلقون القول بالتحريم و منهم من يبيح ضرب الدف بشرط ان لايكون معه شيئ من الشعر وانما يكون محض دف مع ان الاحاديث ترد ذٰلك كما ستعلم مماهنالك اخرج الامام البخاری فی صحيحه من الربيع بنت معوذ بن عفرا قالت جاء النبی صلی الله تعالٰی عليه واله وسلم	یہ سب کچھ اچھی طرح واضح ہے ہر اس بندے پر جس کو اللہ تعالٰی نے دل کی روشنی بخشی ہے اور تمام وہ باتیں جن سے ہم نے منع کیا ہے کیونکہ اس پر قرآن عظیم، حدیث مبارک اور فقہ قویم کے روشن دلائل موجود ہیں لہٰذا واضع حکم نے ہمیں اس کی تفصیل سے بے نیاز کر دیا ہے پھر ہم بعض دلائل بیان کرتے ہیں اس مسئلہ پر جس کی اباحت ہم نے پہلے ذکر کر دی کیونکہ کچھ لوگوں کو ہم دیکھتے ہیں کہ وہ معاملہ میں سختی کرتے ہیں اور مطلق تحریم کا قول ذکر کرتے ہیں (قول بالتحریم مطلق بیان کرتے ہیں) اور کچھ وہ لوگ ہیں جو دف بجانا مباح کہتے ہیں مگر اس شرط کے ساتھ کہ اشعار نہ پڑھے جائیں بلکہ صرف دف بجائی جائے حالانکہ حدیث میں اس کی تردید آئی ہے اور جو کچھ یہاں مذکور ہوگا عنقریب تم جان لوگے امام بخاری نے اپنی صحیح میں ربیع بنت معوذ بن عفراء کے حوالہ سے تخریج فرمائی کہ اس بی بی نے فرمایا کہ حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ان کے ہاں

[1] صحیح بخاری کتاب الادب قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۹۰۸۔۱۰، صحیح مسلم کتاب الفضائل باب رحمتہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم النساء قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۲۵۵، مسند احمد بن حنبل عن انس رضی اللہ تعالٰی عنہ المکتب الاسلامی بیروت ۳/ ۲۵۴

فدخل حسين بن علی فجلس علی فراشی كمجلسك منی فجعلت جويريات لنا يضربن بالدف ويندبن من قتل من اٰبائی يوم بدر[1] الحديث۔	تشریف لائے تو حضرت حسین بن علی حاضر خدمت ہوئے اور میرے بچھونے پر اس طرح تشریف فرما ہوئے جیسے تمھارا میرے پاس بیٹھنا ہے اور ہماری کچھ بچیاں دف بجا بجا کر ہمارے اکابر شہداء بدر کے مرثیے پڑھتی رہیں۔الحدیث۔
واخرج ايضاً عن ام المومنين الصديقة رضی الله تعالٰی عنها انها زفت امرأة الی رجل من الانصار فقال نبی الله صلی الله تعالٰی عليه وسلم ماكان معكم لهو فان الانصار يعجبهم اللهو[2].	اور یہ بھی ام المومنین حضرت عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالٰی عنہا کی سند سے تخریج فرمائی کہ ایک دلہن اپنے انصاری شوہر کے گھر رخصت کی گئی تو حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا کیا تمھارے پاس کوئی کھیل (گانے بجانے) کاسامان نہ تھا کیونکہ انصار اس سے جوش میں آتے ہیں اور خوش ہوتے ہیں،
واخرج القاضی المحاملی عن جابر بن عبدالله رضی الله تعالٰی عنهما فی هذاالحديث انه صلی الله تعالٰی عليه وسلم قال ادركيها يا زينب امرأة كانت تغنی بالمدينة[3]۔	قاضی محاملی نے حضرت جابر بن عبداللہ رضی اللہ تعالٰی عنہما کے حوالے سے اس حدیث کی تخریج فرمائی کہ حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا کہ اے زینب! کسی ایسی عورت سے رسائی حاصل کرو جو مدینہ منورہ میں گانے والی ہو، محدث ابن ماجہ نے حضرت ابن عباس کے حوالے سے تخریج فرمائی (اللہ تعالٰی دونوں سے راضی ہو) انھوں نے فرمایا سیدہ عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالٰی عنہا نے قبیلہ انصار میں اپنی ایک قربتدار کا نکاح کیا تو حضور اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم

[1] صحیح البخاری کتاب النکاح باب ضرب الدف بالنکاح قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۷۷۳

[2] صحیح البخاری باب النسوۃ اللاتی یھدین المرأۃ الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۷۷۵

[3] فتح الباری بحوالہ المحاملی کتاب النکاح باب النسوۃ اللاتی یھدین المرأۃ الخ مصطفی البابی مصر ۱۱/ ۱۳، عمدۃ القاری کتاب النکاح باب النسوۃ اللاتی یھدین المرأۃ الخ ادارۃ الطباعۃ المنیریۃ بیروت ۲۰/ ۱۴۹

सय्यिदुश्शुहदा अमीर हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब رضی اللہ عنہ के ग़म मे सय्यिदा फ़ातिमा رضی اللہ عنہا बिन्ते रसूलुल्लाह ﷺ का रोना

* इमाम हाकिम 'अल मुस्तदरक अस्सहीहैन में हदीष नकल करते है :

4319ـ اَخْبَرَنَا اَبُو عَبْدِ اللّٰهِ مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللّٰهِ الصَّفَّارُ حَدَّثَنَا اَبُوْ بَكْرِ بْنُ اَبِی الدُّنْيَا الْقَرَشِيُّ حَدَّثَنِی عَلِیُّ بْنُ شُعَيْبٍ حَدَّثَنَا بْنُ اَبِی فُدَيْكٍ اَخْبَرَنِی سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوُدَ عَنْ اَبِيْهِ عَنْ جَعْفَرِ بْنِ مُحَمَّدٍ عَنْ اَبِيْهِ اَنَّ اَبَاهُ عَلِیَّ بْنَ الْحُسَيْنِ حَدَّثَهُ عَنْ اَبِيْهِ اَنَّ فَاطِمَةَ بِنْتَ النَّبِیِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَتْ تَزُوْرُ قَبْرَ عَمِّهَا حَمْزَةَ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ فِی الْاَيَّامِ فَتُصَلِّی وَتَبْكِیْ عِنْدَهُ ـ

هٰذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الْاِسْنَادِ وَلَمْ يُخَرِّجَاهُ

* **तर्जमा :-** हमको खबर दी अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अब्दिल्लाह सफ़्फ़ार से उन्होंने सुना अबूबक्र बिन अबूद्दन्या अल करसी से उन्होंने सुना अ़ली बिन शुअ़य्ब से उन्होंने सुना बिन अबू फुदयकिन से उन्होंने ख़बर दी सुलैमान बिन दाऊद से उन्होंने रिवायत किया अपने वालिद से उन्होंने रिवायत किया जा'फर बिन मुहम्मद (इमाम जा'फर सादिक رضی اللہ عنہ) से, इमाम जा'फर सादिक अपने वालिद (इमाम बाक़िर رضی اللہ عنہ) के हवाले से उनके वालिद (इमाम ज़यनुल आबेदीन رضی اللہ عنہ) का बयान नक़ल करते हैं, उनके वालिद हज़रत इमाम हुसैन رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं, **"हज़रत फ़ातिमा رضی اللہ عنہا अमूमन नबी अकरम ﷺ के चचा हज़रत हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब رضی اللہ عنہ की कब्र की ज़ियारत के लिए जाया करती थी और उनकी कब्र के पास नमाज़ भी पढती थी और बहुत रोया करती थी ।"**

"ये हदीष सहीहुल ईस्नाद है लेकिन इमाम बुख़ारी رحمۃ اللہ علیہ और इमाम मुस्लिम رحمۃ اللہ علیہ ने इनको नक़्ल नहीं किया ।"

(अल मुस्तदरक लिल हाकिम, जिल्द-4, सफा-89, ह.4319)

ग़मे हुसैन ﷺ में आसमान का गिरया करना

* **इमाम जलालुद्दीन सुयूती ﷺ अपनी तफसीरे कुरआन 'तफसीर दुर्रे मन्सुर' में 'सूरह दुख़ान' की आयत नंबर 29 की तफसीर में लिख़ते है -**
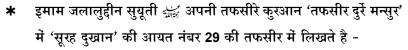
तरजुमा :- फिर न (तो) उन पर आसमान और ज़मीन रोए और न ही उन्हे मोहलत दी गई ।

* **तफसीर :-** इमाम इब्ने अबी हातिम ﷺ, हजरत उबैद अल मकतब ﷺ से और वोह हजरत इब्राहिम अल नख़ई ता'बई ﷺ से रिवायत नक़्ल करते है : "जब से कायनात तख़्लीक हुई है आसमान और ज़मीन सिवाय दो अफराद के किसी के लिए नहीं रोई ।" उन्होंने उबैद अल मकतब ﷺ से पूछा के "(क्या) उन्हे पता है की आसमान व ज़मीन मोमीन पर नहीं रोते ?" (फिर) फ़रमाया : "वो जगह रोती है जहां वो रहता है और आसमान में जहां से उसका अमल बुलन्द होता है ।" फिर (उबैद) से पूछा "क्या तूं जानता है की आसमान के रोने से क्या मुराद है ?" (उबैद) ने अर्ज किया, "नहीं ।" (इब्राहिम नख़ई ﷺ) ने फ़रमाया : **"वो सुर्ख़ (लाल) हो जाता है और उसका रंग रंगे हुए चमडे की तरह सुर्ख़ हो जाता है, हजरत यह्या बिन जकरिया ﷺ को जब क़त्ल किया गया तो आसमान सुर्ख़ हो गया और उसने ख़ून बरसाया और जब हजरत इमाम हुसैन ﷺ को शहीद किया गया तो आसमान सुर्ख़ हो गया था ।"**

* इमाम इब्ने अबी हातिम ﷺ ने हजरत ज़ैद बिन ज़ियाद ﷺ से रिवायत नक़्ल की है जब हजरत इमाम हुसैन ﷺ को शहीद किया गया तो चार माह तक आसमान के किनारे सुर्ख़ (लाल) रहे ।

(तफसीर : दुर्रे मन्सुर, जिल्द-05, सफा-1112/1113)

सूरज को ग्रहण लगा और सात (७) दिन तक अंधेरा छा गया

* हजरत अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती ﷺ फ़रमाते है : जब सय्यिदना इमाम हुसैन ﷺ शहीद किए गए उस दिन सूरज को ग्रहण लग गया । सात दिन तक दुनिया में अंधेरे का आलम रहा । 4 महिनों तक आसमान के किनोर सुर्ख (लाल) रहे । धीरे धीरे ये सुर्खी (ललाश) चली गई । मगर आज भी सुब्ह व शाम के वक़्त इसी सुर्खी को देखा जाता है जो इससे पेहले नहीं थी ।
* रिवायत है के जब सय्यिदना इमाम हुसैन ﷺ को शहीद किया गया तो इतना जबरदस्त सूरज ग्रहण हुआ की दिन में सितारे निकल आए ।

(मजमाउल ज़वाइद, जिल्द-07, हदीस-115-163)

सितारें टूटने लगे

* यज़ीदी लश्करीयो ने जब सय्यिदना इमाम हुसैन ﷺ के लश्कर में एक उंट को ज़िबह किया तो उसका गोश्त सुर्ख (लाल) हो गया और पकाया तो कडवा हो गया । दीवारों पर धूप का रंग ज़ाफरानी (केसरी) रहा । सितारे एक-दूसरे पर टूट कर गिरते रहे ।

(शहीद इब्ने शहीद, पेज-365/366) (तारीख़ुल ख़ुल्फा - पेज-304) (सवाइके मुहर्रिकह, पेज-645)

* हजरते उम्मे हिब्बान फ़रमाती है की : जिस दिन हज़रत इमाम हुसैन ﷺ शहीद किए गए उस दिन से हम पर तीन रोज़ तक अंधेरा रहा और जिस शख्स ने मुंह पर जाफरान (केसर) लगाया उसका मुंह जल गया और बैतुल मुकद्दस के पथ्थरों के नीचे ताज़ा खुन पाया गया । **(ख़साइसे कुबरा, भाग-2, पेज-206)**

आसमान से खून बरसा

* हजरत अ़ली बिन मसहर अपनी दादी से रिवायत करते है की वो फ़रमाती है : मैं हज़रत इमाम हुसैन ﷺ की शहादत के वक़्त जवान लडकी थी, कई दिनों तक आसमान उन पर रोया या'नी खुन बरसा । **(बैहकी (इमाम बैहकी), सिर्रुश्शहादतैन, पेज-33)**
* इमाम इब्ने सीरीन ﷺ फ़रमाते है की : बेशक दुनिया पर तीन दिन तक अंधेरा रहा और आसमान पर सुर्खी (ललाश) ज़ाहिर हुई और आसमान पर शफक के साथ जो सुर्खी होती है वो सय्यिदना इमाम हुसैन ﷺ की शहादत से पहले नहीं थी ।

(तेहज़ीबुत्तहज़ीब, पेज-354) (सिर्रुश्शहादतैन, पेज-33)

(बहवाला : ख़ुत्बाते करबला, पेज-215-216) (सवाइके मुहर्रिका, पेज-645)

सय्यिदना इमाम हुसैन ﵁ की शहादत पर जिन्नातों की नौहा ख्वानी

मदीना शरीफ, बारगाहे रसूल ﷺ में जिन्नातों की नौहा ख्वानी

* उम्मुल मु'मिनीन सय्यिदा उम्मे सलमा ﵂ ने फ़रमाया : मैंने सुना शहादते हुसैन ﵁ पर जिन्नातोंने नौहा ख्वानी की वो रोकर ये पढ रहे थे

أيها القوم القاتلون حسيناً ابشروا بالعذاب والتنكيل

قد لعنتم على لسان داؤد وموسى وحامل الإنجيل

तर्जुमा :

"ऐ हुसैन ﵁ के क़ातिलों ! अज़ाब की खुशखबरी हासिल करों, हज़रत दाउद, हज़रत मूसा और हज़रत ईसा ﵈ के ज़रीए तुम पर ला'नत की गई ।"

(शैख़ आलिम मुहदिष हसन बिन ज़मान बिन कासिम अली जुल्फिकार अली बिन इमाम कुल तुर्कमानी हैदराबादी मु -1325 जिक्रे शहादत अली व हुसैन ﵄ P-111)

* हजरत मैमुना ﵂ फ़रमाती है की उन्होने हजरत हुसैन ﵁ पर जिन्नात को नौहा करते सुना है।

(शहीद ईब्ने शहीद, पेज-365) (दलाईलुन्नुबुव्वाह, अबु नुए'म असफहानी, जिल्द-02, हदीष-1801-1804) (सवाइके मुहर्रिका, पेज-191) (अलबिदाया वन्निहाया, जिल्द-08, पेज-201) (मजमाउल जवाईद, जिल्द-7, किताब मनाकिब, हदीस-15179, 15180) (हाफिज हैसमी ﵀ कहते है की ये दोनों रिवायत सहीह है ।)

ग़मे हुसैन में ज़मीन का गिरया करना

وعن الزهری ، قال: مارفع بالشام حجر یوم قتل الحسین بن علی، إلا عن دم.

तरजुमा : इमाम अल जुहरी रिवायत करते है की सय्यिदना इमाम हुसैन के क़त्ल के दिन शान (सीरिया) में जो भी पथ्थर उठाया जाता उसके नीचे से ताज़ा खून नज़र आता ।

(मजमउज़्ज़वाइद, जिल्द-07, हदीष-15160) (हाफिज हैसमी कहते है की यह हदीष सहीह है ।)

बरतन खून से भर गए

* हजरत बुशरा अज़वियाह फ़रमाती है - "जब हज़रत इमामे हुसैन शहीद किये गए तो आसमान से खून बरसा । सुब्ह को हमारे मटके, घड़े और सारे बरतन खून से भरे हुए थे ।" **(सवाइके मुहर्रिका, पेज-644)**
* शहादते हुसैन के बाद जो भी वाकेआत पेश आए जैसे के ज़मीन ने खून उगला, आसमान से खून बरसा, सूरज को ग्रहण लगा, ये सब वाकेआत बहवाला अल्लामा इब्ने हजर अस्कलानी, इमाम बैहकी, हाफिज अबू नुए'म अस्फहानी, अल्लामा इब्ने कसीर, इमाम जलालुद्दीन सुयूती और शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दीष दहेलवी जैसे जलीलुलकद्र मुहद्दिषीन ने अपनी मो'तबर किताबो मे नक़्ल किए है । जिनके हवाले इस किताब में मोजूद है ।

इमाम अहमद बिन हम्बल और ग़मे हुसैन

* अस्वद बिन आमीर रिवायत करते है अल रबीअ बिन मन्जर से वह अपने वालिद से की, इमाम हुसैन फ़रमाते है की :

"जो आंख हमारे ग़म में रोई या एक आंसु हमारे लिए गिराया, अल्लाह उसे बहिश्त (जन्नत) से नवाजेगा ।"

(फज़ाइले सहाबा, इमाम अहमद बिन हम्बल, जिल्द-02, सफा-675, हदीस-1154, दार अल मारफा, बैरुत)

हज़रत हुसैन की ज़ियारत और उन पर रोने के फज़ाईल (सीरत व अहादीषे नबवी की रोशनी में) :

इमाम अहमद बिन हम्बल ने फज़ाईलुस्सहाबा में फज़ाइले अ़ली में नक़्ल किया है ।

हमसे बयान किया अहमद बिन इसराईल ने, वोह कहते है मैं ने देखा अहमद बिन मुहम्मद बिन हम्बल की किताब में जो उन्ही के हाथ से लिखी हुई थी के हमसे बयान किया अस्वद बिन आमिर अबू अब्दुर्रहमान ने उनसे रबीअ बिन मन्ज़र ने, उनसे उनके वालिद ने, वोह कहते है के हज़रत हुसैन बिन अ़ली फ़रमाया करते थे के, **"जिस शख़्स की दोनों आंखें मुझ पर एक भी आंसू बहाएं या कतरा भी गिराएं तो अल्लाह उसको जन्नत में दाख़िल करेगा।"**

अहमद बिन अब्दुल्लाह अत्तबरी ज़ख़ाईरुल उक़बी नक़्ल करते हैं :

रबीअ बिन मन्ज़र अपने वालिद से रिवायत करते है के हुसैन बिन अ़ली फ़रमाया करते थे के **"जिस शख़्स की दोनों आंखों ने हमारे सिलसिले में एक भी आंसू बहाया या एक भी कतरा गिराया तो अल्लाह उसको जन्नत अता करेगा ।" अहमद ने इसको मनाकिब में नक़्ल किया है ।**

अहमद बिन अब्दुल्लाह तबरी "ज़ख़ाईरुल उक़बा" सफा 151 पर नक़्ल करते है :

मूसा बिन अ़ली रज़ा बिन जा'फ़र ﷺ से रिवायत करते है के उन्हो ने फ़रमाया के जा'फ़र बिन मुहम्मद ﷺ से हज़रत हुसैन ﷺ की कब्र की ज़ियारत के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा के "मेरे वालिद ने मुजे बताया के 'बेशक जिसने हज़रत हुसैन ﷺ की कब्र की ज़ियारत उनका हक़ समझते हुए की तो अल्लाह ﷻ उसके लिए ईल्लिय्यिन लिख देगा', और फ़रमाया के **'सत्तर हज़ार पुरअंगेज़ हाल फिरिश्ते हज़रत हुसैन ﷺ की कब्र के इर्दगिर्द है जो ता क़यामत उन पर रोते रहेंगे, अबूल हसन अल अतक़ीने तख़रीज की है ।"**

मुहम्मद बयूमी ने 'अस्सयिदा फ़ातिमा ज़हरा ﷺ' के सफा ४९ पर नक़्ल किया है :

इमाम अहमद ﷺ ने 'फज़ाईल' में मुहिब्ब तबरी ﷺ ने 'ज़ख़ाइर' में रिवायत किया है : वोह कहते है के, हमसे रिवायत किया अहमद बिन इसराईल ने, वोह कहते है के देखा अहमद बिन मुहम्मद बिन हम्बल ﷺ की अपने हाथ से मख़्तूत किताब में लिखा हुवा, वोह कहते है के हुसैन बिन अ़ली ﷺ फ़रमाते थे के **"जिस शख़्स की दोनों आंखे मुझ पर आंसू का एक कतरा भी गिराएं तो अल्लाह ﷻ उसको जन्नत में दाखिल करेगा।"**

बाकषीर हज़रमी ﷺ 'वसीलतुल माल' सफा 60 मकतबा ज़ाहिरीया, दिमश्क के नुस्खे में नक़्ल करते है :

वोह रिवायत करते है रबीअ् बिन अल मन्ज़र से वोह अपने वालिद से वोह कहते है के हज़रत हुसैन ﷺ फ़रमाया करते थे के **'जिस की दोनों आंखें मुझ पर रोई या मेरे सिलसिले में एक कतरा भी गिराऐं तो अल्लाह ﷻ उसको जन्नत में दाखिल करेगा ।'** और एक रिवायत में है के 'अल्लाह ﷻ उसको जन्नत में ठिकाना देगा ।' अहमद ﷺ ने 'मनाक़िब' में तख़रीज़ की है ।

(ख़ुसरो क़ासिम फी मक़तल इमाम हुसैन ﷺ)

फरिश्तों का ग़मे हुसैन ؓ

* कुतबुल अकताब, गौसुस्सकलैन, महबूबे सुब्हानी, सैयद अब्दुल क़ादिर जिलानी ؒ की तरफ मन्सूब गुनियत्तुत्तालिबिन में है की, हजरत उसामा हजरत सय्यिदना इमाम जा'फ़र सादिक़ ؓ से रिवायत फ़रमाते है की : **जिस दिन हज़रत हुसैन ؓ शहीद हुए उस दिन से 70,000 फरिश्ते कयामत तक रोते रहेंगे ।**

(गुनियतत्तालिबिन, पेज-432) (बहवाला - शामे करबला, पेज-235)

बाबा फरीदुद्दीन गंजेशकर رحمۃ اللہ علیہ का मुहब्बते हुसैन رضی اللہ عنہ में आंसू बहाना

* सुल्तानुल औलिया हजरत ख्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते है की, मैं माहे मुहर्रम शरीफ.... हिजरी में सुल्तानुल मशाइख़, सिराजुल औलिया, शैख़ुल इस्लाम वल मुस्लिमीन हजरत बाबा फरीदुद्दीन मस्उद गंजेशकर رحمۃ اللہ علیہ की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुआ तो आपने आशूरा की फज़ीलत में फ़रमाया :
* इन अशरा में किसी और काम में मशगूल नहीं होना चाहिए । सिवाय इताअत, तिलावत, दुआ व नमाज वगैराह । इस लिए की इस अशरा में कहरे इलाही भी हुआ है और बहुत रहमते इलाही भी नाज़िल हुई है । बाद अजां फ़रमाया की, “क्या तुझे मालुम नहीं की इस अशरा में ﷺ पर क्या गुजरी ? और आप ﷺ के फरज़ंदो को किस तरह बेरहमी से शहीद किया गया ? बाज़ प्यास की हालत में शहीद हुए की इन बदबख़्तों ने इन अल्लाह ﷻ के प्यारों को पानी का एक कतरा तक न दिया । जब शैख़ुल इस्लाम ने यह बात फरमाइ तो एक नारा मार कर बेहोश होकर गिर पडे । जब होश में आए तो फ़रमाई कैसे संग दिल काफिराने आक़ेबत, बेसआदत और नामहेरबान थे ? हालांकी उन्हे ख़ूब मालूम था की यह दीन व दुनिया और आख़िरत के बादशाह के फरज़ंद है, फिर भी उन्हे बड़ी बेरहमी से शहीद किया और उन्हे यह ख्याल न आया की कल कयामत के दिन हजरत ख्वाजाए आलम ﷺ को क्या मुंह दिखाऐंगे ?”

(राहतुल कुलुब, पेज-57) (बहवाला : शामे करबला, पेज-335/336)

ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया رحمة الله عليه का ग़मे हुसैन رضي الله عنه में रोना

* हजरत ख्वाजा अमीर खुसरो निज़ामी फ़रमाते है की, “मुहर्रम की 5 तारीख्र को सुल्तानुल औलिया हजरत ख्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया, महबुबे इलाही رحمة الله عليه की कदमबोसी का शर्फ हासिल हुआ । बातचीत के दौरान हज़रत ख्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया رحمة الله عليه खूब रोने लगे और फ़रमाया की, हज़रत फ़ातिमा رضي الله عنها के जिगरगोशों का हाल सबको मालूम है की ज़ालिमों ने उनको दश्ते करबला में किस तरह भूखा-प्यासा शहीद किया । फिर फ़रमाया की इमाम हुसैन رضي الله عنه की शहादत के दिन सारा जहां तीरह व तार हो गया, बिजली चमकने लगी, आसमान और जमीन जुंबीश करने लगे, फरिश्ते अकब में थे और बार बार हक तआला से इजाज़त तलब करते थे के हुक़्म हो तो इन तमाम ईजा दरिन्दो को (यजीदीयों को) मलिया मेट कर दे । हुक्म होता है के तुम्हे उससे कुछ वास्ता नहीं है, तकदीर यूं ही है, मैं जानुं और मेरा दोस्त हुसैन رضي الله عنه । तुम्हारा इसमें दख़ल नहीं है । मैं कयामत के दिन उन ज़ालिमों के बारे में उन्ही (अपने दोस्त) से फैसला कराउंगा, जो कुछ वह कहेंगे उसी के मुताबिक होगा ।”

(अफज़लुल फवाइदा, उर्दु तर्जमा, पेज-75) (बहवाला : शामे करबला, पेज-336)

गौसुल आलम, मेहबुबे यज़्दानी, सुल्तान सय्यिदना मख्दुम अशरफ जहांगीर सिमनानी (किछौछा शरीफ) का ग़मे हुसैन और मुहर्रम के 10 दिनों का अमल

* शैख़ुल आरफीन हजरत निज़ाम यमनी की किताब 'लताईफे अशरफी' जिसमें सय्यिद मख्दुम अशरफ जहांगीर सिमनानी (किछौछा शरीफ) की सवानेह व फज़ाइल और मल्फूज़ात का तज़किरा है उससे सय्यिद मख्दुम अशरफ का मुहर्रम के अव्वल 10 दिनों में ग़मे हुसैन मनाने के बारे में 'लतीफा ईक्यावन : अलम व तबल वगैराहा' के बारे में 'दौराह' के जिम्मे कुछ ईस तरह नक़्ल किया गया है। '**अक़ाबिरए रोज़गार और सादातए सहीहुन्नसब का अमल है के वोह मुहर्रम के इब्तेदाह (शरुआती) दस (10) रोज़ में दौराह करते है और ज़म्बिल (Basket) को भी गर्दिश देते है। विलादते सब्ज़वार में सय्यिद अ़ली कलन्दर ख्वाजा युसुफ चिश्ती के मुरीद बडे आली मरतबा बुज़ुर्ग थे। और उनका मामुल था के मुहर्रम के अशरा अव्वल (शरुआती दिनों) में अलम के नीचे बैठते थे और अपने मुरीदों को दौराह के लिए भेज देते थे और कभी ख़ुद भी दौरा करते थे। ग़म व अंदोह के मरासिम बजा लेते, नफीस लिबास इस अशराह (10 दिनो) में नही पहनते थे और ऐश व शादी के अस्बाब तर्क कर देते थे।**'
* "सय्यिद अशरफ ने भी कभी ये दौर तर्क नही किया। सय्यिद अ़ली कलन्दर की तरह खुद अलम के नीचे बैठे और अस्हाब को दौरा की इजाज़त देते लेकिन अशराह के आख़िरी तीन दिन ख़ुद भी अस्हाब के साथ गलीयों मे गश्त लगाते थे।"

सय्यिद मख्दुम अशरफ ﷺ के पीरो मुर्शीद मख्दुम अलाउद्दीन गंजेनबात ﷺ का मुहर्रम के 10 दिनों में ग़मे हुसैन ﷺ

* सय्यिद अशरफ जहांगीर सिमनानी ﷺ फ़रमाते थे की जब वह बंग़ाल में हज़रत अलाउद्दीन गंजेनबात ﷺ (आपके पीरो मुर्शीद) की ख़िदमत में हाज़िर थे तो वहां भी एक मरतबा ये बहश हुई थी और बंग़ाल के आलिमों और फाज़िलों ने बहश और हुज्जत के बाद येह तय किया था कि यज़ीद पर लानते फिस्क जायज़ है ।
* **मख्दुम अलाउद्दीन ﷺ का भी यही दस्तूर था के अशराए मुहर्रम के इब्तेदाइ दस दिन (10 Days) गिरयाज़ारी में बसर करते थे और फ़रमाते थे की वोह वली भी अजीबो गरीब होगा जो खानदाने रसूल ﷺ और जिगर गोशए बतुल ﷺ के ग़म पर आंसू ना बहाये और उनका ग़म ना करे ।**

(बहवाला : लताइफे अशरफी (उर्दु), जिल्द-दुवम, सफहा:244-247)

मुअल्लिफ : शैख़ुल आरेफीन हज़रत निज़ाम यमनी ﷺ

तरजमा : हजरत अल्लामा मौलाना हकीम सय्यिद शाह अब्दुल हयी अशरफीउल जिलानी ﷺ, सज्जादानशीन व मुतवल्ली किछौछा शरीफ

मुरत्तिब : शैख़े तरीकत, काइदे अेहले सुन्नत, मज़हर-उल-मशाएख़ हज़रत सय्यिद शाह मज़हरुद्दीन अशरफ अशरफी-उल-जिलानी

* इसी तरह लताईफे अशरफी के मुतरजिम 'अल्लामा शम्सुल हसन बरेल्वी और प्रोफेसर एस.एम. लतीफुल्लाहने "लतीफा-51 तबल व अलम और ज़म्बिल फिराने का बयान" के जिम्मे में कुछ इज़ारत तरजमा यूं फ़रमाया है :
* मजलिस में रोज़े आशुराह का ज़िक्र हुवा । हज़रत कुदवतुलकुब्रा (सय्यिद मख्दुम अशरफ) ﷺ ने फ़रमाया की अकाबिराने ज़माना और बुज़ुर्गाने शेहर,

ख़ास तौर पर वोह हज़रत जो **'सहीहुन्नसब सादात'** और अ़ली हसब नक़ीब है, मुहर्रम के इब्तिदाई दस रोज़ (1 से 10 चांद मुहर्रम) दौरे पर जाते और 'ज़म्बिल' फिराते है, जैसा की बयान किया जा चूका है की मुल्क सब्ज़वार में ख़्वाजा अ़ली जो अस्हाबे सुफीया के पेश्वा और उस गिरोह के सरदार थे, **मुहर्रम के दस दिन 'अलम के नीचे' बैठते थे और अपने मुरीदों को 'दौराह' करने भेजते थे । कभी-कभी ख़ुद भी दौरे पर चले जाते और रस्मे अजादारी अदा करते थे ।** मसलन अशराए मुहर्रम में बेशकिंमत लिबास नहीं पहनते थे और ऐश व ख़ुशी के अस्बाब तर्क कर देते थे ।

* "हज़रत कुदवतुल कुब्रा (सय्यिद मख़्दुम अशरफ) ने आशुरा के मामुलात तर्क नहीं किये, कभी ब-ज़ात ख़ुद अलम के नीचे बैठते और कभी सय्यिद अ़ली कलन्दर को जो आप के मुख़्लीस अस्हाब-व-अहबाब में से थे, उनको हुक़्म फ़रमाते थे के वोह अलम के नीचे बैठे । अश्रा के आख़िरी दो-तीन रोज़ (या'नी मुहर्रम के 8, 9, 10 चांद) यज़ीद पर लानत करते थे और आप के अस्हाब भी आप की मवाफक़त करते थे ।"
* हज़रत कुदवतुल कुब्रा (सय्यिद मख़्दुम अशरफ) फ़रमाते थे, "हज़रत शैख़ (आप के पीरो मुर्शीद मख़्दुम अलाउद्दीन) मुहर्रम की पेहली तारीख़ से दस तारीख़ तक गिरया व ज़ारी करते थे और फ़रमाते थे के **वोह अजीब दिल है जो ख़ानदाने रसूल और जिगर गोशाने बतुल के मातम में ना रोये और उनकी ग़म पुरसी बे-तआल्लुक हो जाए । सुब्हानल्लाह यही हक़ीकी नियाजमंदी है ।"**

तर्जमा : *जो शख़्स इस तरह के ग़म पर गिरया व ज़ारी ना करे शायद उस का दिल पथ्थर का होगा ।*

(लताईफे अशरफी, जिल्द-03, सफहा : 425-433)

जो आँख हमारे (अह्ले बैत के) ग़म में रोई या एक
कतरा आंसु हमारे लिए गिराया,
अल्लाह ﷻ उसे बहिश्त (जन्नत) से नवाज़ेगा
- **सय्यिदना इमाम हुसैन** رضی اللہ عنہ

(फ़ज़ाइले सहाबा, इमाम अहमद बिन हम्बल رحمۃ اللہ علیہ)

Imam Jafar Sadiq Foundation
(Ahle Sunnat)

Modasa, Aravalli, Gujarat (India)
Mo. 85110 21786